साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली

फोन प्राचार्या : (0581) 3582193

CRITERION III RESEARCH, INNOVATIONS AND EXTENSION

3.3.2.1 - Number of research papers in the Journals notified on UGC website during the year

S. No.	Faculty	Research Papers	Page no.
1.	Mrs. Seema Agarwal	पंचायतीराज व्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी एक सामाजिक अध्ययन	2-5
2.	Prof. Anamika Kaushiva	Sustainable Development Goal of Climate Action and India's Policy Approach	6-8
		A Study of the New Education Policy 2020's Approach for Achieving Sustainable Development through Inclusive and Equitable Education	9-10
3.	Dr. Seema Gautam	भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भूमिका	11-13
		Historical Evalution of the Katheria Rajputs in Budaun	14
4.	Dr. Pratibha Pandey	कामायनी में मानवतावाद	15-18
		राम की शक्ति पूजा: एक अध्ययन	19-22
5.	Dr. Anita	अज्ञेय की प्रतीक योजना	23-26
6.	Dr. Priti Verma	Evolution of Physique in Youth Combat Athletes:Morphological Variations across Age Groups	27-29
7.	Dr. Beena Yadav	The Theme of Alienation in Patrick White's Literary Works	30
		African American Folklore in the Novels of Toni Morrison	31-32
8.	Dr. Jyoti Gupta	Reflection on Educational Scenario in Perspective of Human Being's Dignity	33-34
9.	Dr. Ruchi Agarwal	R.K. Narayan's "The Martyr's Corner": A Showcase of Marketing Mix	35
		Introduction/Review of a book in the 'New Release' feature of a literary journal	36
10.	Dr. Divya Yadav	NEP 2020 Multidisplinary Approaches in Higher Education Institution.	37-40
11.	Mrs. Afroz Jahan	Concept of Family in the Novels of Jane Austen	41-43
12.	Ms. Pragati Agarwal	Role of Digital Banking in India: Current Trends and challenges	44

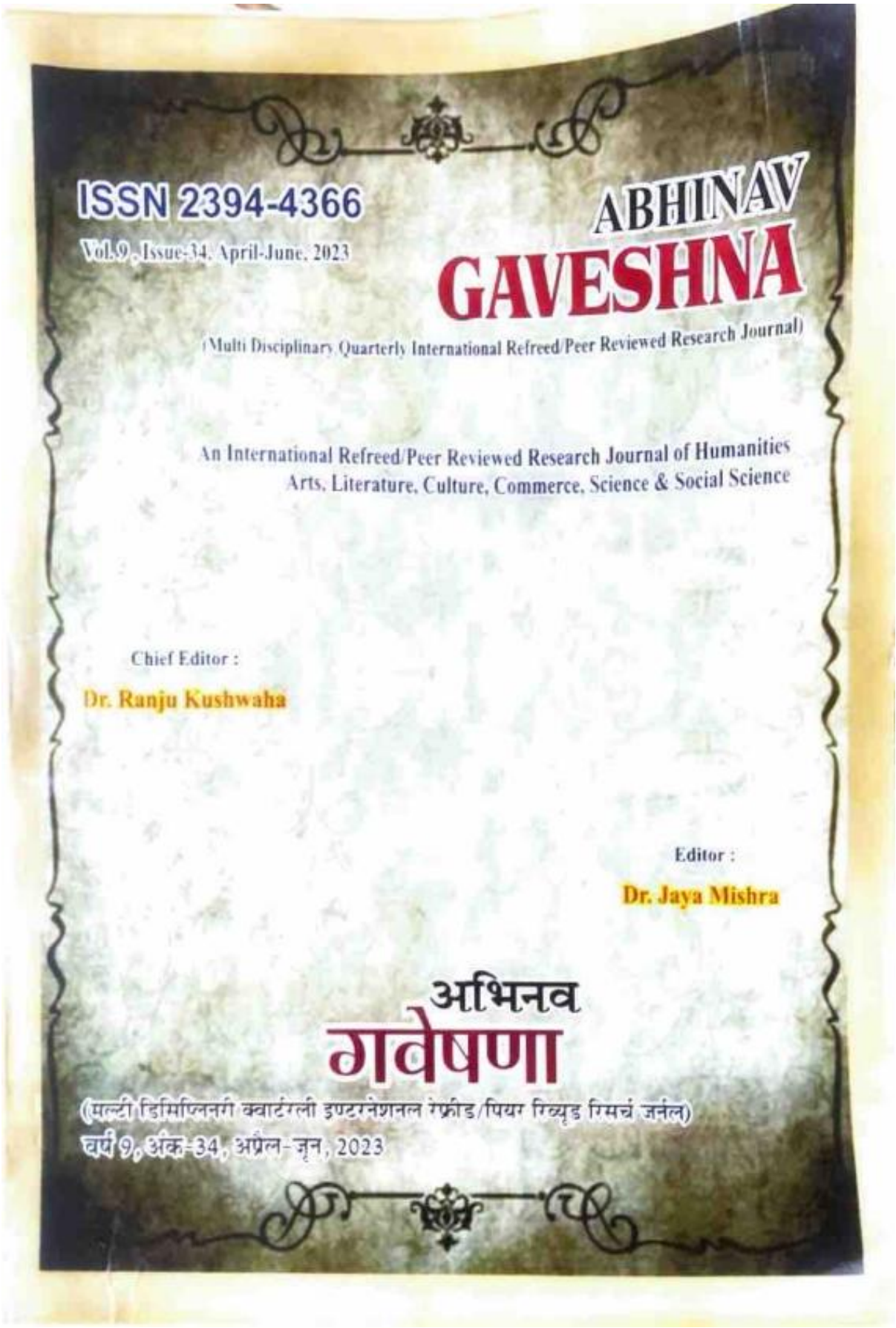
ISSN 2394-4366
Vol.9, Issue-34, April-June, 2023
ABHINAV
GAVESHNA
(Multi Disciplinary Quarterly International Refreed/Peer Reviewed Research Journal)
An International Refreed/Peer Reviewed Research Journal of Humanities
Arts, Literature, Culture, Commerce, Science & Social Science
Chief Editor :
Dr. Ranju Kushwaha
Editor :
Dr. Jaya Mishra
अभिनव
गवेषणा
(मल्टी डिसिप्लिनरी क्वार्टरली इण्टरनेशनल रेफ्रीड/पियर रिव्यूड रिसर्च जर्नल)
वर्ष 9, अंक-34, अप्रैल-जून, 2023

Received: 29 Jan., 2023; Accepted: 30 Jan.,-2023, Published: April - June, 2023, Issue
ISSN : 2394-4366

पंचायतीराज व्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

- डॉ. श्रद्धा शर्मा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर –
समाजशास्त्र विभाग,
के. बी. एस. महाविद्यालय,
हैदरगढ़, बाराबंकी–225001
(उत्तर प्रदेश)

ई-मेल:
drsharmashraddha83@gmail.com

- श्रीमती सीमा अग्रवाल
एसोसिएट प्रोफेसर –
समाजशास्त्र विभाग,
साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय,
बरेली–234001 (उत्तर प्रदेश)

ई-मेल:
seemaagar@gmail.com

सारांश

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी का मानना है कि आत्मनिर्भर गांवों के द्वारा ही वास्तविक लोकतन्त्र की प्राप्ति सम्भव है। इसके अनुसार- 'स्वतन्त्रता स्थानीय स्तर से प्रारम्भ होनी चाहिए। इस प्रकार प्रत्येक गाँव एक गणराज्य अथवा पंचायत राज होगा। प्रत्यके के पास पूर्ण सत्ता एवं शक्ति होगी। इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक गाँव को आत्म-निर्भर होना चाहिए और अपनी आवश्यकताओं को स्वयं पूर्ण करना होगा ताकि वे सम्पूर्ण प्रबन्ध स्वयं चला सकें।' इसी प्रकार पंचायती राज के महत्व के सन्दर्भ में पं. नेहरू ने भी कहवा था कि 'पंचायत सरकारी इमारत की नींव है। यदि यह मजबूत नहीं होगी तो उस पर खड़ी इमारत कमजोर होगी।'

वर्तमान बदलते परिवेश में महिलायें किसी से भी पीछे नहीं रहीं। आज महिलायें घर की चाहरदीवारी के अन्दर चौका, बर्तन, झाडू-पोछा और बच्चों के लालन पालन तक ही सीमित नहीं हैं बल्कि उन्होंने राजनीति, व्यवसाय, शिक्षा तथा सेवा के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनायी है। पंचायती राज के माध्यम से महिला राजनीति का ग्रामीण स्तर तक राजनीतिकरण हो चुका है। शैक्षिक एवं आर्थिक रूप से अति पिछड़े ग्रामीण परिवारों से सम्बन्धित महिलाओं में भी नेतृत्व की भावना जाग चुकी है। राजनीतिक महत्वाकांक्षा के वशीभू होकर उच्च राजनीति में प्रवेश हेतु पतित महिलायें अब आर्थिक स्वावलम्बन, धन-बल पर ही आधारित है और धनोपार्जन के लिए उद्यम करना अति आवश्यक हो जाता है।

ब्रिटिश स्थानीय शासन की व्यवस्था पूर्णतया लोकतन्त्रात्मक है। समस्त स्थानीय इकाइयाँ सीधे जनता द्वारा निर्वाचित हैं। प्रत्येक नागरिक जिसने 18 वर्ष की आयु पूरी कर ली, स्थानीय निर्नाचनों में मत देने का अधिकारी है तथा यदि 21 वर्ष की आयु पूरी कर चुका हो, तो निर्वाचन में उम्मीदवार के रूप में खड़ा भी हो सकता है। केवल अपवाद वे व्यक्ति हैं, जो कि मत देने अथवा चुनाव लड़ने के लिए किसी कारणवश अयोग्य न घोषित किये गये हों। प्रत्येक मतदाता को अपने क्षेत्र में पड़ने वाले समस्त स्थानीय निकायों में मत देने का अधिकार प्राप्त है। इस प्रकार स्टीवर्ट के अनुसार- 'स्थानीय शासन एक ऐसा साधन प्रदान करता है, जिसके द्वारा नागरिक स्थानीय मामलों पर नियन्त्रण रख सकते हैं तथा मत के माध्यम से अपनी इच्छा व्यक्त कर सकते हैं।'

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी का मानना है कि आत्मनिर्भर गांवों के द्वारा ही वास्तविक लोकतन्त्र की प्राप्ति सम्भव है। इसके अनुसार- 'स्वतन्त्रता स्थानीय स्तर से प्रारम्भ होनी चाहिए। इस प्रकार प्रत्येक गाँव एक गणराज्य अथवा पंचायत राज होगा। प्रत्यके के पास पूर्ण सत्ता एवं शक्ति होगी। इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक गाँव को आत्म-निर्भर होना चाहिए और अपनी आवश्यकताओं को स्वयं पूर्ण

करना होगा ताकि वे सम्पूर्ण प्रबन्ध स्वयं चला सकें।' इसी प्रकार पंचायती राज के महत्व के सन्दर्भ में पं. नेहरू ने भी कहना था कि 'पंचायत सरकारी इमारत की नींव है। यदि यह मानव मजबूत नहीं होगी तो उस पर खड़ी इमारत कमजोर होगी।' प्रस्तुत अध्ययन फर्रुखाबाद जनपद उत्तर प्रदेश के सन्दर्भ में किया गया है। निदर्शन चुनाव करते समय उद्देश्य पूर्ण प्रणाली के सहयोग से जनपद फर्रुखाबाद की समान्त महिला प्रधानों का अध्ययन किया गया है।

शोधकार्य में तथ्यों के संकलन के लिए प्राथमिक एवं द्वितीय स्रोतों के आधार पर किया गया है। अन्वेषणात्मक शोध प्रस्थान, का प्रयोग किया गया है। 17.49 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने गाँव के प्रमुख व्यक्तियों की प्रेरणा से राजनीति में प्रवेश करना बताया। 39.34 प्रतिशत उत्तरदाताओं परिवार की राजनीतिक पृष्ठभूमि के कारण राजनीति में आई। मित्र/रिश्तेदारों के आग्रह से राजनीति में आने वाली उत्तरदाताओं की संख्या 37.16 प्रतिशत है केवल 6.01 प्रतिशत उत्तरदाताओं ही ऐसी है जो स्वयं की इच्छा से राजनीति में आई। 16.48 प्रतिशत कांग्रेस, 19.13 प्रतिशत भारतीय जनता पार्टी, 40.44 प्रतिशत समाजवादी पार्टी, 16.94 प्रतिशत, बहुजन समाज पार्टी 12.01 प्रतिशत किसी भी दल से सम्बद्धता नहीं रखने वाली उत्तरदाता थी।

40.44 प्रतिशत उत्तरदात्रियों ने सम्बद्धता का कारण परिवार की दल से प्रतिबद्धता बताया। दल की नीतियों एवं कार्यक्रमों से प्रभावित होकर 10.93 प्रतिशत उत्तरदात्रियाँ सम्बद्ध हुई, स्थानीय प्रभावशाली व्यक्तियों की दल से सम्बद्धता को 34.42 प्रतिशत उत्तरदात्रियों ने उनकी दलीय सम्बद्धता का कारण बताया, 14.21 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने क्षेत्र में दल के परम्परागत प्रभुत्व को सम्बद्धता का कारण बताया।

पंचायत प्रतिनिधि बनने से पूर्व राजनीति महत्वाकांक्षा मात्र 37.16 ही महिलाओं की जब वर्तमान में 50.82 प्रतिशत महिलायें अब राजनीति के पसन्द करने लगी है। जब कि पूर्व 62.82 प्रतिशत महिलायें राजनीति पसन्द नहीं करती थी। 33.88 प्रतिशत महिलायें ने तो यहाँ तक स्वीकार किया कि आगे अगर अवसर मिता तो भी और नहीं मिला तो भी वो पंचायत को किसी न किसी पद पर चुनाव लड़ेंगी जब 66.12 प्रतिशत ने नहीं में उत्तर दिया।

पंचायतीय राज में आरक्षण के उपरान्त आई महिलाओं से जब शोधार्थी ने उच्च राजनीति में जाने की बात की तो उनसे मिले साक्षात्कार में 50.82 प्रतिशत ने हाँ, 20.77 प्रतिशत ने नहीं तथा 17.49 प्रतिशत ने 10.92 प्रतिशत ने अनुत्तरित की स्थिति से नहीं, प्रश्न पर कोई उत्तर नहीं दिया।

39.44 प्रतिशत संवेदनशील, 34.97 संवेदनशील, 25.59 प्रतिशत स्थानीय संवेदनशील प्रदर्शित हुई। इस प्रकार उक्त आशावादी माने जा सकते हैं। 1.63 प्रतिशत 24.60 प्रतिशत अपने पद में वोटर वाले, 40 पिछड़ी वर्ग की स्थिति 32.79 प्रतिशत लेकर वरीयता सूची बनाने की बात करते पंचायती राज में महिलायें दलितों व विशेष रुचि रखते हैं, ये तथ्य सिर्फ ही नहीं कार्यक्षेत्र के अवलोकन से अनुभव हुआ।

प्रशासन से सहसम्बन्ध की स्थिति में के सामान्य, 42.62 प्रतिशत के अच्छे, अच्छे, 21.85 प्रतिशत अच्छे नहीं है।

पंचायती राज में सहभागिता के उपरान्त विधायक व सांसद व अन्य शासन के पहलुओं के स्तर 32.79 के अच्छे 15.30 बहुत अच्छे 35.52 सामान्य है।

आरक्षण व्यवस्था के प्रति जो महिलायें या तो उच्च शिक्षित हैं या फिर राजनीतिक से अभिरुचि में वृद्धि के कारण भी महिलाओं के प्रति जागरुक हो रही हैं। पंचायती राज क्रियान्वयन ग्रामीण क्षेत्रों में होने के कारण अशिक्षित एवं अनुभवहीन होने के कारण उनकी स्तर भी अत्यन्त न्यूनतम है। पंचायत से प्रतिनिधि वर्तमान में अपने दायित्वों एवं पूर्णतः सजग नहीं हुई हैं क्योंकि ग्रामीण प्रारम्भिक चरण है।

देश के अभी निरपेक्ष लोकतान्त्रिक विधानसभा एवं लोक सभा की भांति पंचायत सभी आर्थिक, साम्प्रदायिक एवं अन्य व्यक्तियों लेकिन जनपद फर्रुखाबाद में संख्या के आधार पर हिन्दू और अल्पसंख्यक इस्लाम के मानने वाले की भागीदारी है। प्रजातन्त्र में सभी जाति वर्ग के जनपद की पंचायत व्यस्था में भागीदारी संख्या के पिछड़े वर्ग से सम्बन्धित जातियों जैसे (किसान), कुर्मी आदि जातियों के

[illegible] वर्ग की जातियों और सर्वाधिक [illegible] जातियों का देखा गया है।

[illegible] होता है कि जनपद की पंचायती राज [illegible] है, जो उद्यमी है क्योंकि धन के [illegible] जा सकती। जनपद की पंचायती [illegible] की ही भागीदारी सुनिश्चित [illegible] के लिए स्थान नहीं अर्ध सरकारी [illegible] महिलायें के लिए राजनीति [illegible] नहीं होता इसलिए बेरोजगार [illegible] निभाने का समय नहीं होता [illegible] महिलाओं ने उद्यमिता को आय का [illegible] व्यवस्था में पदार्पण किया।

[illegible] राज व्यवस्था के अन्तर्गत ग्रामीण [illegible] कार्य पंचायतों को सौंप दिये हैं। [illegible] की भांति अब पंचायतों का कार्य न्याय [illegible] ग्रामीण विवादों निपटारा करना नहीं [illegible] व्यवस्था के अन्तर्गत निर्वाचित [illegible] बढ़कर ग्रामीण विकास से सम्बन्धित [illegible] रही हैं। जन प्रतिनिधि के रूप में पंचायती [illegible] से पूर्व ग्रामीण महिलाओं में राजनीति के [illegible] नहीं थी। लेकिन राजनीति में पदार्पण के [illegible] अभिरुचि में लगातार वृद्धि हो रही है। [illegible] ग्रामीण महिलाओं की स्थिति अत्यन्त [illegible] ग्रामीण महिलाओं की भांति महिला [illegible] कार्यों में समय तथा श्रम व्यय करती हैं जो कि [illegible] गैर आर्थिक उद्यम है।

[illegible] व्यवस्था में जनपद की महिला प्रतिनिधियों [illegible] गैर राजनीतिक तथा राजनीतिक दोनों प्रकार की [illegible] महिला प्रतिनिधि राजनीतिक दलों से सम्बद्ध [illegible] लेकिन उनके परिवार के पुरुष किसी न किसी दल से [illegible] रखते है। अधिकांश महिला जन प्रतिनिधि [illegible] समस्याओं के प्रति जागरूक नहीं हैं और न ही उनमें [illegible] लेने की क्षमता है लेकिन विकास कार्यों में वे [illegible] भूमिका निभा रही है। सरकार द्वारा संचार ने पिछड़े व [illegible] के उत्थान हेतु योजनाओं में महिला प्रतिनिधि बढ़-[illegible] हिस्सा ले रही हैं। ऋण, अनुदान, पेंशन आदि अनेक [illegible] योजनाओं में महिला प्रतिनिधि हिस्सा ले रही हैं।

[illegible]

(1) आदर्श पंचायतों के ऊपर फिल्में बनाकर [illegible]

(2) [illegible]

(3) [illegible]

(4) [illegible]

(5) राजनैतिक [illegible] प्रतिनिधियों के प्रति पुरुष समाज की [illegible] होगी।

(6) समानता पर आधारित सामाजिक [illegible] गठन करना आवश्यक है। ऐसे समाज का निर्माण [illegible] जहाँ मानव द्वारा मानव का शोषण नहीं, [illegible] दूसरे को सम्मान की दृष्टि से देखें।

(7) अधिकतर महिला प्रतिनिधि अनपढ़ है, जिससे उनको पंचायत के लेखापत्र, नियम पढ़ने में या लिखने में दिक्कत आती है। अतः महिला पंचायत प्रतिनिधियों को शिक्षा देनी जरूरी है। प्रौढ़ शिक्षा का लाभ उठाकर एक शिक्षित व्यक्ति एक अनपढ़ व्यक्ति को पढ़ाने का संकल्प करे तो निरक्षरता का कलंक शीघ्र ही दूर हो सकता है और इससे पंचायत सक्षम बनेंगी।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1- आप्टे, प्रभा, भारतीय समाज में [illegible], जयपुर, 1996।

2- बीजू, एम. आर., डायनामिक्स ऑफ न्यू पंचायत राज सिस्टम, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1997।

3- भदौरिया, बी. पी. एस. एवं दुबे बी. के पंचायत राज एण्ड [illegible] डेवलपमेंट, कॉमनवेल्थ पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1989।

4- जोशी, आर. पी. कान्स्टीट्यूशनलाइजेशन ऑफ पंचायत राज, रावत पब्लिकेशंस, जयपुर - 1997।

5- मेवाराम (आई. ए. एस.) - 'न्याय पंचायत निर्देशिका' पंचायती राज उत्तर प्रदेश शासन लखनऊ, अक्टूबर - 1974।

6- मुखर्जी रवीन्द्र नाथ - 'सामाजिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी' विवेक प्रकाशन, नई दिल्ली - 1990।

7- कुरुक्षेत्र - ग्रामीण क्षेत्र एवं रोजगार मंत्रालय, कृषि भवन, नई दिल्ली।

8- पंचायतीराज : अपना राज - आओ जाने इसके काम, नेहरू विकास मंत्रालय, भारत सरकार।

◈◈

October to December 2023
E-Journal
Volume I, Issue XLIV

RNI No. – MPHIN/2013/60638
ISSN 2320-8767, E-ISSN 2394-3793
Scientific Journal Impact Factor- 7.671

Naveen Shodh Sansar

(An International Refereed/ Peer Review Research Journal)

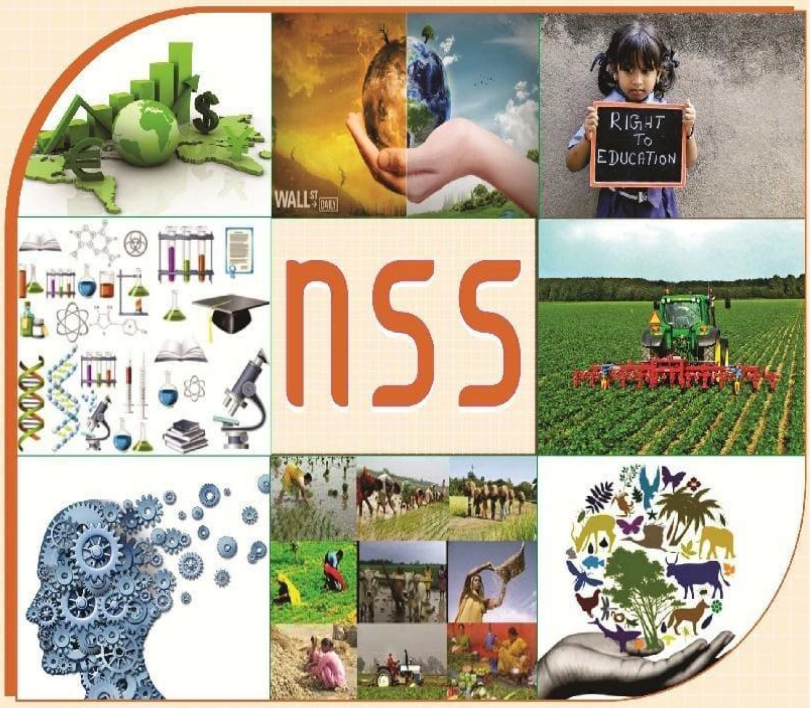

नवीन शोध संसार

Editor - Ashish Narayan Sharma

Office Add. "Shree Shyam Bhawan", 795, Vikas Nagar Extension 14/2, **NEEMUCH** (M.P.) 458441, (INDIA)
Mob. 09617239102, **Email** : nssresearchjournal@gmail.com, **Website** www.nssresearchjournal.com

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 7.671
October to December 2023, E-Journal, Vol. I, Issue XLIV

Index

01. Index 02
02. Regional Editor Board / Editorial Advisory Board 08/09
03. Referee Board 10
04. Spokesperson 12
05. A Study of the New Education Policy 2020's Approach for Achieving Sustainable Development through Inclusive and Equitable Education (Dr. Anamika Kaushiva) 14
06. Existential Dilemma in Harold Pinter's The Birthday Party (Monalisa Das) 20
07. Legal Remedies Through Judicial Activism (Kavita Shukla) 24
08. Psychotherapy Utilizing Cow-Assisted Therapy (CAT) and Cow Cuddling Therapy (CCT) for Individuals with Psychiatric Disorders (Chandra Bahadur Singh Dangi, Shadma Siddiqui) 27
09. A Comparative Study on Service Quality in Private and Public Hospitals in Madhya Pradesh (Dr. Hemant Kumar Shrotriya, Ms. Taruna Gitkar, Ms. Shery Asthana) 32
10. Exploring The Ecological Significance Of Mycorrhizal Symbiosis In Plant Root Systems (Dr. Ragini Sikarwar) 36
11. Nutritional Status and Health Issues of Womenin India (Premlata Menaria) 41
12. भविष्य की संस्कृति - अतिसूक्ष्मवाद (डॉ. कलिका डोलस) 47
13. मध्यप्रदेश मे ग्रीन इंडिया मिशन के क्रियान्वयन का वनो एवं स्थानीय समुदाय पर समग्र प्रभाव का पुनरावलोकन (डॉ. दिनेश कुमार डहारे) 50
14. तलाक (विवाह-विच्छेद) (डॉ. ज़ाकिर खान) 53
15. मध्य प्रदेश के विकास के संदर्भ में स्टार्ट-अप इंडिया आंदोलन की भूमिका (श्रीमती रेणुका पाटीदार, डॉ. प्रवीण ओझा) 59
16. भारतीय संसदीय लोकतंत्र में लोकसभा अध्यक्ष की भूमिका (प्रदीप सिंह, डॉ. आभा बाजपेयी) 63
17. महेश्वरी साड़ी का निर्माण कार्य : सौंसर तहसील, छिंदवाड़ा (म.प्र.) के विशेष संदर्भ में (संध्या गजभिये) 66
18. व्यक्तित्व विकास और निर्णय कौशल (डॉ. रीतिबाला भोर) 69
19. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के स्कूल इंटर्नशिप के दौरान उनकी कार्यशैली एवं शिक्षण प्रभावशीलता में सहसंबंध का अध्ययन करना (डॉ. बिन्दु कुमारी, कपिल उपाध्याय) 72
20. राजकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के अध्यापकों के व्यक्तित्व एवं उनकी व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन (डॉ. बिन्दु कुमारी, राकेश रेगर) 76
21. राजकीय एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य में सहसंबंध का अध्ययन (डॉ. बिन्दु कुमारी, योगेन्द्र कुमार रावल) 80
22. नृत्य की वर्णमाला 'हस्तमुद्रा' एवं दैनिक जीवन में प्रयुक्त हस्तभंगिमाएं : एक अवलोकन (डॉ. अपर्णा चार्चोदिया) 83
23. भारत में लैंगीक न्याय हेतु समान सिविल संहिता एक महती आवश्यकता - एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (विजय लक्ष्मी जोशी) 86

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 7.671
October to December 2023, E-Journal, Vol. I, Issue XLIV

A Study of the New Education Policy 2020's Approach for Achieving Sustainable Development through Inclusive and Equitable Education

Dr. Anamika Kaushiva*

*Professor (Economics) Sahu Ram Swaroop Mahila Mahavidyalaya, Bareilly (U.P.) INDIA

Abstract - The United Nations, in 2015, adopted a set of goals and targets for 'sustainable development' withthe universal principle of 'leaving no one behind'. Seventeen Sustainable Development Goals were laid down of which the fourth goal aims to provide inclusive and equitable quality education. As a signatory to the summit, India is committed to undertake policy initiative to chieve the goal. 'Inclusive Education' has a broad perspective of encompassing within the educational framework all those who are excluded due to poverty, gender, caste, religion and language, disability, inadequate access, lack of infrastructure, and curriculum.It targets all learners who are at risk of marginalization, exclusion. The National Education Policy 2020 emphasises in its vision on its objective to provide equitable access to education for all learners from different socio-economic backgrounds. NEP recognises the issues of low enrolment ratio and high dropout rates in children from poor socio-economic strata, minorities, rural areas, geographically inaccessible regions, disabilities and gender differentials and has emphasised on inclusive and equitable education. The NEP 2020 clearly earmarks the children of disadvantaged groups that have been underrepresented in education as the Socio-Economically Disadvantaged Groups and categorizes them into different categories to ensure that measures are undertaken for each. The research paper analyses the key recommendations in NEP 2020 focusing on inclusive education for sustainable development.

Keywords: Sustainable Development, Inclusive and Equitable Education, NEP 2020, Socio-Economically Disadvantaged Groups.

Introduction - The United Nations, in 2015, presented universal and transformative goals and targets for 'sustainable development' and committed themselves to achieving them by 2030 – The Sustainable Development Goals (SDGs). The aim of these goals was a three-dimensional -economic, social, and environmental. The SDG declaration states, "Recognizing that the dignity of the human person is fundamental, we wish to see the Goals and targets met for all nations and peoples and for all segments of society. And we will endeavour to reach the furthest behind first."[1] Mapping the road for sustainable development, 17 SDGs were announced to transform the world. Of these seventeen goals, the fourth goal aims to provide inclusive and equitable quality education. As a member of United Nations, India too is committed to the universal principle of "leave no one behind"[2] and the Niti Ayog's SDG vertical stated its vision and mission of, "accelerated adoption, implementation, and monitoring of the SDG framework and related initiatives at the national and sub-national levels."[3]In alignment with this goal, when India's National Education Policy 2020 (NEP) was formulated to reform the education system, it emphasised in its vision that the aim of NEP was to provide "equitable access to the highest-quality education for all learners regardless of social or economic background."[4]

The NEP has been presented as a reform in the existing educational structurewhich will transform the India into a global knowledge superpower by restructuring the current education system and aligning it with SDG4 and at the same time making India's traditions and value systems an integral part of the educational setup.

An underlying vision which runs across the entire policy inclusive and equitable education. Recognizing the issues of low enrolment ratio and high dropout rates in children from poor socio-economic strata, minorities, rural area, geographically inaccessible regions, disabilities, gender differential, the NEP has focused on inclusive and equitable education. The research paper analyses these key recommendations on inclusive education and the challenges before the NEP.

Objectives of the Research Study:

i. To understand the concept of equitable and inclusive education.
ii. To study the extent of exclusion and inequity in India

ISSN::2583:7877 ONLINE VERSION

International Journal of Science and Social Science Research

Vol.2 No.1, 2024

EDITORS-IN-CHIEF

DR. ASHISH KUMAR SHUKLA
HEAD DEPARTMENT OF MATHEMATICS
RSKD PG COLLEGE, JAUNPUR, UP, INDIA-222001
EDITORS@IJSSSR.COM

DR. GAGAN PRIT KAUR
ASSISTANT PROFESSOR
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
RSKD PG COLLEGE, JAUNPUR, UP, INDIA-222001
EDITORINCHIEF@IJSSSR.COM

ISSN: 2583-7877

International Journal of Science and Social Science Research
Peer Reviewed (Refereed) Journal
www.ijsssr.com

Cert.No.-240625 Date:13/06/2024

CERTIFICATE OF PUBLICATION

This is to certify that **Dr. Anamika Kaushiva**, Professor, Department of Economics, Sahu Ram Swaroop Mahila Mahavidyalaya, Bareilly, U.P, India has published a paper/article entitled **"Sustainable Development Goal of Climate Action and India's Policy Approach"** in the issue **Vol. 2 No. 1, April-June 2024** with paper ID **IJSSSR-0278**.

With Regards

Dr. Ashish Kumar Shukla
Editor-in-Chief
editors@ijsssr.com

Dr. Gagan Prit Kaur
Editor-in-Chief
editorinchief@ijsssr.com

Sustainable Development Goal of Climate Action and India's Policy Approach

Dr. Anamika Kaushiva
Professor, Department of Economics, Sahu Ram Swaroop Mahila Mahavidyalaya, Bareilly, U.P, India
Author Email: econanamika@gmail.com

Abstract—The rapid industrialization across the globe is the root cause of climate change phenomenon because this growth was fostered by large scale production in industries using fossil fuels. The concentration of greenhouse gasses in the earth's atmosphere is directly linked to the rising average global temperature on Earth. This global warming is causing changes in weather patterns or 'climate change'. The long-term consequences of climate change are already visible as the world is facing extreme weather conditions. The nations across the world realised that it was critically important to take climate action and make development 'sustainable'. Global agreements have been signed to discuss the climate change issue, initiate climate action and monitor its progress. All agreements primarily emphasise on its mitigation, adaption and reduction of impact. Countries are switching from use of fossil fuels to renewable energy sources to reduce the emissions causing pollution. The developed countries have made a commitment of 'Net Zero' by 2050 and the developing economies too have to follow suit in the next half of the century. This research paper outlines the issue global warming and climate change and the factors causing it, traces the evolution of the concept of sustainable development i.e. the integration of environment policies with development strategies. It explores the SDG 13: Climate Action and the the Paris Agreement and the subsequent Climate Change Conference of Parties. It then discusses India's commitment to climate action commitments.

Keywords: Climate Action, COP, Global Warming, Sustainable Development

I. INTRODUCTION

The past two centuries, and especially during the last five decades, global warming has occurred due to the rapid pace of industrialisation and globalisation. As the growth rates in the developed countries increased, pollution and deforestation increased causing a sweeping environmental degradation. Rapid industrialization fostered large scale production in industries using fossil fuels. High and uncontrolled emissions greenhouse gasses, mainly carbon dioxide and methane, due to use of fossil fuel has resulted in a blanket wrapped around the Earth, trapping the sun's heat and raising temperatures. The concentration of greenhouse gasses in the earth's atmosphere is directly linked to the rising average global temperature on Earth. (IPCC) This global warming is causing changes in temperatures and weather patterns or 'climate change". The top five emitters (China, The United States of America, India, the European Union, The Russian Federation) accounted for about 60 per cent of greenhouse gas emissions in 2021. (UNEP Gas Emission Report 2023) Increasing global population and the consequent rise in demand for food supplies and land areas for housing, has led to unsustainable agriculture, receding forests, illegal logging and about 47% of the world's forests are at high risk for deforestation or degradation by 2030. (WWF) The long-term consequences of climate change are already visible as the world is facing extreme weather conditions -heatwaves, droughts, flooding, winter storms, hurricanes and wildfires. (IPCC) Besides these, other disastrous effects are - water scarcity, severe forest fires, disappearing islands due to rising sea levels, flooding, melting glaciers, cyclones and declining biodiversity.

The nations across the world realised that it was critically important to decrease global warming through economic, social and environmental, strategies and make development sustainable. Global agreements have been signed to discuss the climate change issue, initiate climate action and monitor the progress. All agreements primarily emphasise on: decreasing emissions of greenhouse gasses, introducing sustainable measures to adapt to climate change, develop policies of sustainable development. Countries are switching from use of fossil fuels to renewable energy sources like solar and wind resources to reduce the emissions causing pollution. The developed countries have made a commitment of 'Net Zero' by 2050 and the developing economies too have to follow suit.

Dr. Seema Gautam

Year : 9, Vol. : IX
No. : 2, 2023

ISSN : 2395-4078

Dr. Janak Singh Socio Cultural Educational Society

JANAK : A JOURNAL OF HUMANITIES

CHIEF PATRON:

Professor Udai Prakash Arora
(Retd. Greek Chair Professor)
School of Language, Literature & Culture Studies
J.N.U., New Delhi, India

EDITORIAL BOARD

CHIEF EDITOR :

Dr. Deepak Singh
Assistant Professor - Department of History
Swami Shukdevanand College
Shahjahanpur, (U.P.)

ASSOCIATE EDITOR :

Dr. Seema Gautam
Associate Professor - Department of History
S. R. S. Mahila Mahavidyalaya, Bareilly

Shri Dheeraj Kumar Rastogi
Department of Basic Education
Shahjahanpur

ASSISTANT EDITOR :

Dr. Vinita Lal
Professor - Department of Sociology
N.S.C.B. Govt. Girls P.G. College,
Aliganj, Lucknow (U.P.)

Dr. Dhananjay Singh
Associate Professor - Department of Chemistry
P.P.N. (P.G.) College, Kanpur

Dr. Prashant Agnihotri
Department of Basic Education
Hardoi

Dr. Vineet Shrivastava
Associate Professor - Department of Teacher's Education, S.S. College, Shahjahanpur

18. भारत छोड़ो आन्दोलन में सर्वोच्च बलिदानः आजमगढ़ जनपद का मधुवन गोली कांड एव...
रचित सिसोदिया 100
19. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भूमिका
पूर्वा दीक्षित 107
20. स्वतंत्रता संग्राम में उर्दू शायरों की भूमिका
नजमा बेगम 114
21. बुन्देलखण्ड में अठारह सौ सत्तावन की क्रान्ति के गुमनाम नायक/नायिका
आशुतोष शर्मा 117
22. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के नायक : ठाकुर रणमत सिंह
अनुराग श्रीवास्तव 125
23. स्वातंत्र्य समर उपरांत आमजन की चुनौतियाँ और कृष्णा सोबती
सना परवीन 130
24. भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका : संविधान निर्माण के सन्दर्भ में
लक्षलता प्रजापति 133
25. स्वतंत्रता सेनानी श्री धन्नालाल पटवा का स्वतंत्रता संग्राम एवं गोवा मुक्ति सत्याग्रह .....
धर्मेंद्र कुमार 138
26. गाँधीवादी युग के स्वतंत्रता आंदोलनों में महिलाओं की भूमिका
प्रज्ञा सिंह 142
27. 1857 का विद्रोहः सिपाही एवं राष्ट्रीय प्रवृत्ति
राजीव दूबे 144
28. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भूमिका
विनोद कुमार सिंह, अशोक कुमार सिंह 151
29. भारतीय स्वतंत्रता समर की वीर महिला नायक
सीमा गौतम, अनम फातिमा 156
30. स्वतंत्रता आन्दोलन में जनपद गाजीपुर के महिलाओं की भूमिका–एक ऐतिहासिक अध्ययन
अवनीश कुमार यादव 159
31. आजाद भारत में समाज एवं धर्म
बबीता 163
32. भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन में महिलाओं की भूमिका
ज्योत्सना भट्ट, मोहित कुमार शर्मा 167
33. उत्तराखण्ड राज्य के गठन में महिलाओं का योगदान
कल्पना उप्रेती 173
34. नवाब खान बहादुर खान : रुहेलखण्ड में 1857 के नेतृत्वकर्ता
चन्द्रकेश 176
35. मुगलकाल और सांस्कृतिक संवर्धन
लक्ष्मी कुमारी 182
36. अद्भुत अनुपम जिला है शाहजहाँपुर
विकास खुराना 186

37. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का नायक : एक अवलोकन – बिरसा मुंडा के विशेष संदर्भ में
राजेश मौर्य 188
38. भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन और महिलायें
संदीप गंगवार, राधेश्याम सरोज 193
39. साम्प्रदायिकता एवं भारत विभाजन से अनुप्राणित हिन्दी उपन्यासों का ऐतिहासिक अनुशीलन
अंकित कुमार 198
40. असहयोग आन्दोलन में उत्तर प्रदेश की महिलाओं की भूमिका
योगेन्द्र कुमार 203
41. भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में बिहार के गुमनाम नायक
प्रिन्स कुमार 206
42. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में धार्मिक संस्थाओं की भूमिका
सुभाष चन्द्र मौर्या 209
43. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की गुमनाम नायिका : एक समीक्षा
प्रियंका 214
44. भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका
प्रियंका सरोज 218
45. एक राष्ट्र के रुप में भारत का उदय : जम्बूद्वीप से हिन्दुस्तान
मोनिका 223
46. स्वतन्त्रता आन्दोलन में नारी–शक्ति की भूमिका
सुमिता शर्मा 228
47. आजाद भारत में समाज एवं धर्म एक समाजशास्त्रीय अध्ययन
आरती मिश्रा 232
48. स्वातंत्र्य समर में हिन्दी की भूमिका
दुर्ग विजय 235
49. सामाजिक और सांस्कृतिक विचार
ध्रुव कुमार, वर्षा तिवारी 241
50. पूर्व मध्यकालीन बन्द अर्थव्यवस्था
वेद प्रकाश 245
51. उत्तर प्रदेश के गुमनाम स्वतंत्रता सेनानी
शिवानी भारद्वाज 250
52. स्वतंत्रता आन्दोलन में राम प्रसाद बिस्मिल का योगदान
विवेक कुमार 256
53. स्वतंत्रता संग्राम में उत्तर प्रदेश का योगदान
बुद्धप्रिय सिद्धार्थ 260
54. Representation of Women as Symbols of Resistance against Colonialism in Bankim .....
Sashi Bhushan 264
55. Historical Evolution of the KatheriaRajputs in Budaun
Shaleen Kumar Singh, Seema Gautam 270

IMPACT FACTOR SJIF-8.164

ISSN 2278-3911

अंक : 106 वर्ष : 31 संख्या : 1 जनवरी-मार्च,2024

SHODH-PRAKALP

A Peer Reviewed Refereed Quarterly Research Journal

(As per UGC Regulations)

शोध-प्रकल्प

त्रैमासिक रिसर्च जर्नल

www.shodh-prakalp.com

Editor
DR. SUDHIR SHARMA

संपादक
डॉ. सुधीर शर्मा
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाई नगर जिला- दुर्ग (छ.ग.)

■ शोध एवं अनुसंधान विकास केंद्र, रायपुर का प्रकाशन
■ RESEARCH & RESEARCH DEVELOPMENT CENTRE, RAIPUR

■ अंतरराष्ट्रीय मानक मान्यता प्राप्त बहुप्रसारित भारत के अनेक विश्वविद्यालयों में मान्य शोधपत्रिका

Volume CVI Number 1 Jan-March. 2024

U.G.C. NO. 63535(OLD LIST) email :shodhprakalp@gmail.com

SHODH-PRAKALP
A Peer Reviewed Refereed Quarterly Research Journal ISSN 2278-3911

अंक : 106 वर्ष : 31 संख्या :1 जनवरी-मार्च,2024

INDEX

1.	राजेन्द्र यादव के कथा साहित्य में संस्कृति	डॉ मनुप्रताप	07
2.	औषधियों का औषधालय आंवला एवं सर्पगन्धा से आर्थिक आत्मनिर्भरता	डॉ. मधुरानी	12
3.	कथाकार मुंशी प्रेमचन्द की दलित–चेतना	हेमलता	17
4.	भारत में राष्ट्रीय चेतना का विकास	डॉ. (श्रीमती) रीना मजुमदार डॉ. शैलेन्द्र कुमार ठाकुर	21
5.	निर्गुण भक्ति साहित्य में चित्रित समाज	प्रियंका टोप्पो	24
6.	Ecosystem of Entrepreneurship Development in Higher Education	Ankita Deshmukh Dr. Prachi Singh	27
7.	लोककला के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन के सूत्रधार दाऊ रामचन्द्र देशमुख	डॉ. निधि वर्मा सतीश कुमार यदु	32
8.	21वी शताब्दी की महिला कहानीकारों के कहानियों में स्त्री विमर्श नारी का महत्त्व एवं स्वरुप	डॉ. तारणीश गौतम महेश्वरी गढ़ेवाल	36
9.	यात्रा–संस्मरण में वर्णित क्षेत्र विशेष की प्रमुख समस्याएँ	सुनील कुमार, डॉ. इन्द्रनारा	41
10.	भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में दिनकर की भूमिका	श्रीमती प्रमिला पटेल डॉ. शैलेंद्र कुमार ठाकुर, डॉ. फिरोजा ज़ाफर अली	45
11.	मानस के पात्र जटायु और संपाती की मानवीय संवेदना	निशा साहू, डॉ.सुधीर शर्मा	49
12.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं संस्कृत : एक विश्लेषण	डॉ. कृपाशंकर पाण्डेय	52
13.	21वीं सदी की महिला कहानीकारों की कहानियों में नारी विषयक अनुभूति एवं मान्यताएं	डॉ. तारणीश गौतम महेश्वरी गढ़ेवाल	56
14.	कामायनी में मानवतावाद	डॉ. प्रतिभा पाण्डेय	60
15.	Benefit Yourself With The Knowledge Of Psychology	Richa sharma	63
16.	हिन्दी साहित्य में विरूद्धों के सामंजस्य का मूल्यांकन	डॉ. सव्यसाची, आरती सिंह	64
17.	Role Of Psychology In Sports	Dr. Richa Sharma	67
18.	सत्यभामा आड़िल के वंषनाम गीतिनाट्य में स्त्री चिंतन	डॉ. कल्पना मिश्रा, सीमा मिश्रा	68
19.	Mapping the digital literary landscape: A study of the emerging genres and sub-genres of Internet literature	Dr Pankaj Bala Srivastava	70
20.	नैतिकताएँ मानवीय एवं सांवैधानिक	मानसी शर्मा, प्रभात रंजन सिंह	82
21.	निर्मल वर्मा की कहानियों में अस्तित्ववाद	हिमांशु सा	87
22.	महिला सशक्तिकरण की संकल्पना	डॉ. मनीषा शुक्ला	91
23.	मुकुंद कौशल की ग़ज़लों में यथार्थ की अभिव्यक्ति	वहीदा परवीन, डॉ. अंजन कुमार	97

www.shodhprakalp.com

टीप : शोध-प्रकल्प में प्रकाशित शोधपत्रों और आलेखों में व्यक्त विचार या तथ्यों से संपादक /संपादक मंडल की सहमति अनिवार्य नहीं है उनके लिए लेखक ही उत्तरदायी हैं। शोधपत्रों में पुनरावृत्ति अथवा मौलिकता के संबंध में लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं।

www.shodh-prakalpresearch.com

SHODH-PRAKALP
A Quarterly Peer Reviewed
Refereed Research Journal

ISSN 2278-3911

कामायनी में मानवतावाद

डॉ. प्रतिभा पाण्डेय
असि. प्रोफेसर हिन्दी विभाग
साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय बरेली

कामायनी के कथानक का आधार वह प्राचीन आख्यान है जिसके अनुसार मनु के अतिरिक्त संपूर्ण देव जाति प्रलय का शिकार हो जाती है और मनु तथा श्रद्धा या कामायनी के सहयोग से मानव सभ्यता का परिवर्तन होता है। कवि ने इसमें जीवन के अनेक पक्षों को समन्वित करके मानव जीवन के लिए एक व्यापक आदर्श व्यवस्था की स्थापना का प्रयास किया है। कामायनी की कथा संक्षेप में इस प्रकार है महाप्रलय के बाद देव संस्कृति के नष्ट हो जाने पर उसके अवशेष के रूप में मनु बच जाते हैं। घूमते–फिरते उनकी भेंट काम कन्या श्रद्धा से होती है।

कामायनी छायावाद के प्रवर्तक महाकवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित महाकाव्य है। कामायनी प्रसाद की अंतिम और अन्यतम का कृति है। प्रसाद को कवि के रूप में प्रतिष्ठित करने का श्रेय कामायनी को है। कामायनी में एक ओर मानव संस्कृति के विकास का आख्यान है और साथ ही साथ आदिम मनुष्य का उत्तरोत्तर जटिल और संगठित होता हुआ रूप है। संस्कृति के विकास में कवि दिखाता है कि कैसे मनुष्य मृगया युग और कृषि युग को पार करता हुआ वर्तमान यांत्रिकी युग में आ पहुंचा है और इस यांत्रिकी युग के क्या खतरे है। तथा उनका अतिक्रमण कैसे संभव है। यह सब कामायनी में इस स्पष्ट रूप से दिखाया गया है।

कामायनी के कथानक का आधार वह प्राचीन आख्यान है जिसके अनुसार मनु के अतिरिक्त संपूर्ण देव जाति प्रलय का शिकार हो जाती है और मनु तथा श्रद्धा या कामायनी के सहयोग से मानव सभ्यता का परिवर्तन होता है। कवि ने इसमें जीवन के अनेक पक्षों को समन्वित करके मानव जीवन के लिए एक व्यापक आदर्श व्यवस्था की स्थापना का प्रयास किया है। कामायनी की कथा संक्षेप में इस प्रकार है महाप्रलय के बाद देव संस्कृति के नष्ट हो जाने पर उसके अवशेष के रूप में मनु बच जाते हैं। घूमते–फिरते उनकी भेंट काम कन्या श्रद्धा से होती है। श्रद्धा उनमें प्रेम दया माया ममता आदि मानवीय संस्कारों का संचार करती है। किंतु श्रद्धा के गर्भस्थ शिशु से मनु को ईर्श्या होती है। वे उसे छोड़कर सारस्वत प्रदेश चले जाते हैं वहां पर इड़ा दिखाई पड़ती है। इड़ा के सहयोग से मनु उस प्रदेश को ज्ञान–विज्ञान के सहारे भौतिक सुख समृद्धि से भर देते हैं। वे इड़ा से दुर्व्यवहार करना चाहते हैं। प्रजा क्रुध और देव बिक्षुब्ध हो उठते हैं। युद्ध होता है युद्ध में मनु मूर्छित हो जाते हैं। मनु को खोजते– खोजते श्रद्धा सारस्वत प्रदेश में पहुंचती है। इड़ा को बुरा–भला कहकर वह अपने पुत्र मानव को उसे सौंप देती है। तत्पश्चात मनु को लेकर वह हिमालय के उस अंचल में पहुंचती है जहां नटराज नृत्य कर रहे थे। जड़ चेतन समरस थे। सारस्वत प्रदेश के नागरिक भी यहीं पर आ जाते हैं और सब आनंदोन्मग्न हो जाते हैं।

कामायनी केवल मनु के व्यक्ति जीवन की ऐतिहासिक कथा ही नहीं है अपितु इन पात्रों की सांकेतिक व्यंजनाएं भी उसमें है। इस संदर्भ में प्रसाद जी ने कामायनी की भूमिका में स्वीकार किया है–"यह आख्यान इतना प्राचीन है कि इतिहास में रूपक का भी अद्भुत मिश्रण हो गया है। इसलिए मनु श्रद्धा और इड़ा इत्यादि अपना ऐतिहासिक अस्तित्व रखते हुए सांकेतिक अर्थ की भी अभिव्यक्ति करें तो मुझे कोई आपत्ति नहीं मनु अर्थात मन के दोनों पक्ष ह्रदय और मस्तिष्क का संबंध क्रमशः श्रद्धा और इड़ा से भी सरलता से लग जाता है।"[1]

कामायनी की यह कथा मानवतावादी विचारों से ओत–प्रोत है। प्रसाद जी का उद्देश्य भारतीय संस्कृति के मूल्यों की पुनर्स्थापना था। उसमें मानवता प्रथम स्थान पर रही। प्रेम, समरसता, विश्व बंधुत्व, नारी सुधार, राष्ट्र प्रेम आदि मानवता वादी भावों के दर्शन कामायनी में पग पग पर देखने को मिलते हैं। इस संदर्भ में बच्चन सिंह का अभिमत ध्यातव्य है "कामायनी में उठाई गई समस्याओं का हल प्रसाद ने अपने ढंग से किया है। वह शुद्ध मानववादी हल है, संभवत आज के संदर्भ में सर्वाधिक प्रासंगिक।"[2]

इसी संदर्भ में जयशंकर प्रसाद का भी अभिमत समीक्ष्य है –"यदि श्रद्धा और मनु अर्थात मनन के सहयोग से मानवता का विकास रूपक है,तो भी बड़ा ही भावमय और श्लांघ्य है यह मनुष्यता का मनोवैज्ञानिक इतिहास बनने में समर्थ हो सकता है"[3]

समरसता का अधिकार उमड़ता कारण जलधि समान) पूर्व से।[12]

प्रसाद के आनंदवाद में भारतीय संस्कृति के 'वसुधैव कुटुंबकम' का भाव निहित है जो मानवतावाद की एक सीढ़ी है। जब हम संपूर्ण विश्व को अपने परिवार के रूप में देखने लगते हैं तो हमारे समस्त दुख समाप्त होकर आनंद की ओर बढ़ने लगते हैं। प्रसाद जी ने कामायनी में आनंदवाद की अद्भुत व्यंजना की है। कामायनी में सर्गों का नामकरण मानव जीवन की समस्त पहलुओं से जोडते हुए किया है। ये सर्ग इस प्रकार है– चिंता आशा श्रद्धा काम वासना लज्जा कर्म ईर्ष्या इड़ा स्वप्न संघर्ष निर्वेद दर्शन रहस्य आनंद। इन सर्गों में आदि मानव मनु चिंता की आशा से श्रद्धा ने काम वासना को लज्जित किया कर्म की ईर्श्या से बुद्धि तर्क ने स्वप्न में संघर्ष किया निर्वेद निद्रा मोह माया का त्याग कर ईश्वरीय दर्शन द्वारा रहस्यमय आनंद की प्राप्ति होती है। आनंद सर्ग आदि मानव मनु संपूर्ण प्रजा को अपने परिवार के रूप में देखते हैं।

हम एक कुटुंब बनाकर
यात्रा करने हैं आए
सुनकर यह दिव्य तपोवन
जिसमें सब अघ छुट जाए।[13]

प्रसाद जी ने समन्वय वाद से संपूर्ण विश्व को एक नीड़ की तरह व्यक्त किया है–

सब भेदभाव बुलाकर हर
सुख को दृश्य बनता।
मानव कहे रे! यह मैं हूं
यह विश्व नीड़ बन जाता।[14]

आदिमानव मनु जब समस्त भेद भाव बुलाकर परिवार के रूप में हिमालय पर होते हैं तभी उन्हें अखंड आनंद की प्राप्ति होती है।

समरस थे जड़ या चेतन
सुंदर साकार बना था
चेतनता एक विलसती
आनंद अखंड घना था।[15]

समग्रतः कहा जा सकता है की कामायनी मानवतावाद का महाकाव्य है। कामायनी के प्रारंभ में देव सभ्यता का विनाश दिखाया जाता है। मध्य में मानव सभ्यता का विकास दिखाया गया है और अंत में आनंदवाद की स्थापना की गई है। आज पारिवारिक सामाजिक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में समरसता सद्भावना उपस्थित करने में निश्चित ही कामायनी के मानवतावाद की महिती भूमिका है। यही मानवतावाद की पुनर्स्थापना इस शोधपत्र का उद्देश्य होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. जयशंकर प्रसाद कामायनी लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद पृष्ठ 10
2. बच्चन सिंह हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास पृष्ठ 342
2. जयशंकर प्रसाद कमाएं लोक भारती प्रकाशन पृष्ठ 48
3. जयशंकर प्रसाद कमाएं लोक भारती प्रकाशन पृष्ठ 36
4. अशोक कौशिक श्रीमद् भगवद् गीता हिन्दी बुक सेन्टर आसिफ अली रोड नई दिल्ली पृष्ठ 60
5. जयशंकर प्रसाद कमायनी लोक भारती प्रकाशन पृष्ठ 60
6. जयशंकर प्रसाद कामायनी लोक भारती प्रकाशन पृष्ठ 112
7. जयशंकर प्रसाद कामायनी लोक भारती प्रकाशन पृष्ठ 156
8. जयशंकर प्रसाद कमाएं लोक भारती प्रकाशन पृष्ठ 48
9. जयशंकर प्रसाद कामायनी लोक भारती प्रकाशन पृष्ठ 15
10. रामस्वरूप चतुर्वेदी हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास पृष्ठ 119
11. जयशंकर प्रसाद कामायनी लोक भारती प्रकाशन पृष्ठ 263
12. जयशंकर प्रसाद कामायनी लोक भारती प्रकाशन पृष्ठ 270
13. जयशंकर प्रसाद कामायनी लोक भारती प्रकाशन पृष्ठ 261
14. जयशंकर प्रसाद कामायनी लोकभारती प्रकाशन पृष्ठ 263
15. जयशंकर प्रसाद कामायनी लोक भारती प्रकाशन पृष्ठ 270

■■

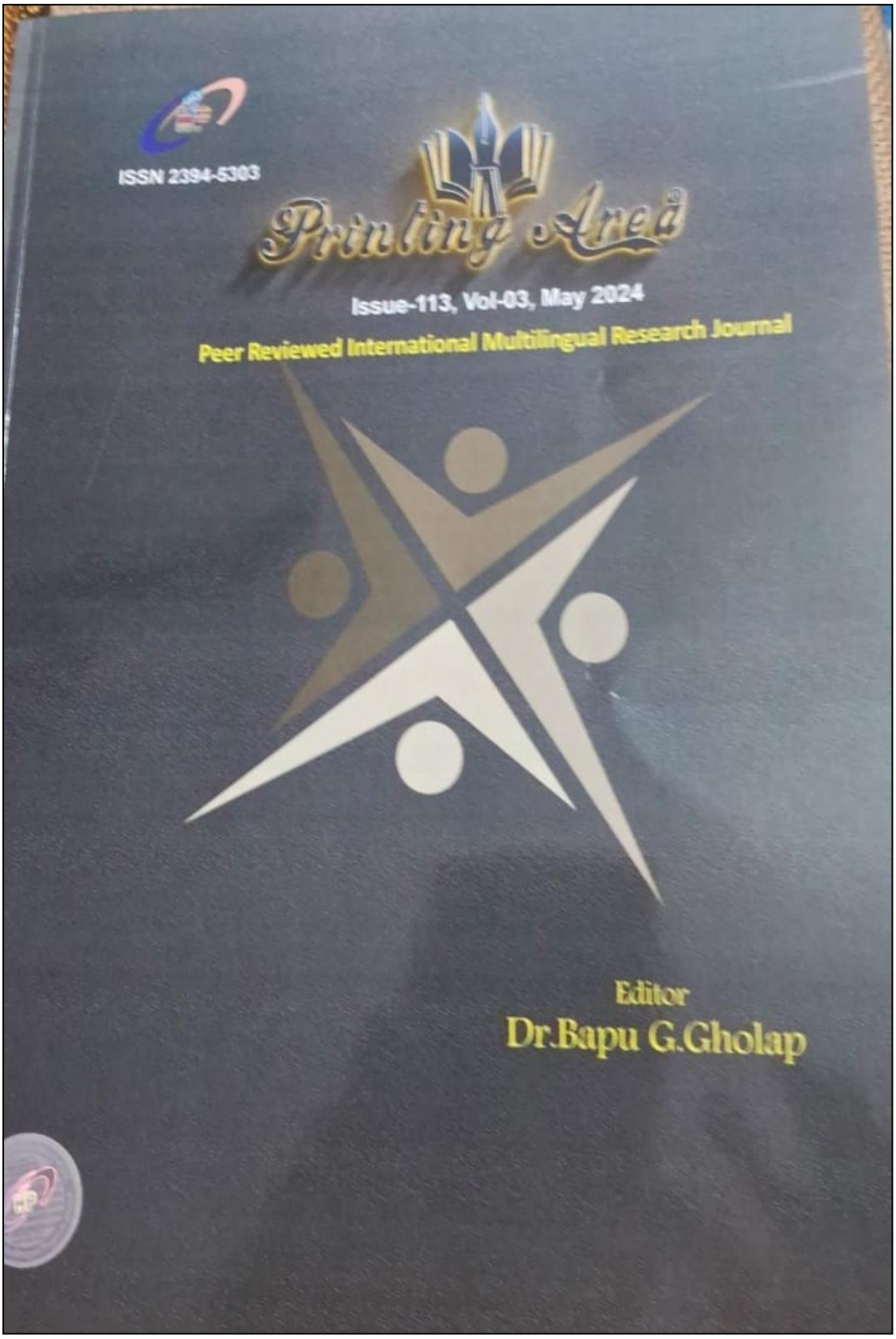
ISSN 2394-5303
Printing Area
Issue-113, Vol-03, May 2024
Peer Reviewed International Multilingual Research Journal
Editor
Dr.Bapu G.Gholap

INDEX

01) Empowerment of the Underprivileged: Panchanan Barma's Contribution for ... ||09
Piyali Chakraborty

02) Enhancing Teaching Effectiveness through Micro-Teaching Sessions in ... ||15
Dr. Sonali Singh, Faridabad

03) मराठी साहित्यातील अंबानगरीचे (अंबाजोगाई) योगदान ||22
प्रा. श्रीकांत दत्तात्रय तनपुरे, जि. अहमदनगर

04) महिलाओं की दयनीय स्थिति का एक समाजशास्त्रीय मूल्यांकन : दहेज के विशेष ... ||27
सुमन उपाध्याय, हरदोई (उ०प्र०)

05) रतनपुर की कला में अंकित शोडष नायिका मूर्तियाँ ||30
प्रदीप कुमार, लोकेश कुमार पारकर, राजिम(छ.ग.)

06) ग्राम की शक्ति पूजा : एक अध्ययन ||33
डॉ० प्रतिभा पाण्डेय, बरेली

07) An Evaluative Study of Usage of College Library Resources and Services.... ||37
Dr. Alok Kumar Tripathi, Mr. Ajay Kumar Yadav, Dr. Sarvesh Kumar

08) Identity Crisis in V.S.Naipaul's A House for Mr. Biswas ||44
Shri. Amit C. Ronghe, Pulgaon

09) A Review on Cloud computing applications in education system in India ||46
Prof. Deepashree Pokhalekar, Prof. Rucha Keyur Panse, Karve Nagar, Pune

10) Attitude toward Selfie Taking and its Relation to Body Image.... ||49
Haresh Chaudhary, Dr. Parulben D. Shukla

11) The Role of Microgrids in Energy Transition ||54
Dr. (Smt.) Manju Banerjee, Bilaspur (C.G)

12) जागतिक पुस्तक दिन व ई–माहितीसाधने ||58
श्री. गोपाळ दगडू सगर, किल्लेधारूर, जी. बीड

www.vidyawarta.com/03_http://www.printingarea.blogspot.com

❑❑❑

06

राम की शक्ति पूजा : एक अध्ययन

डॉ० प्रतिभा पाण्डेय
असिस्टेंट प्रोफेसर हिंदी विभाग,
साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय बरेली

राम की शक्ति पूजा छायावाद के चतुस्तम्भों में प्रमुख स्तंभ सूर्यकांत त्रिपाठी निराला द्वारा प्रणीत कविता है।राम की शक्ति पूजा का मूल स्रोत कृतिवास का बंगला रामायण है —"राम की शक्ति पूजा का मुख्य कथानक कृत्तिवास की बंगला रामायण से लिया गया है"१ यद्यपि राम की शक्ति पूजा का स्रोत बंगला रामायण है किंतु बंगला रामायण की स्थूलता यहां पर दिखाई नहीं देती है। यहां सूक्ष्मता के दर्शन होते हैं। इस संदर्भ में बच्चन का कथन समीक्ष्य है— निराला की राम की शक्ति पूजा में सूक्ष्मता के अनेक स्तरों पर विचरण करने वाली अर्थ योजना हिंदी प्रदेश का संयम और पौरूष है। बंगला रामायण जितना बहिर्मुखी है राम की शक्ति पूजा उतनी ही अंतर्मुखी२। इसमें कवि ने एक ऐतिहासिक प्रसंग के द्वारा धर्म और अधर्म के शाश्वत संघर्ष का चित्रण किया है राम धर्म के प्रतीक है और रावण धर्म का। राम की शक्ति पूजा के प्रसंग है —राम की पराजय, राम की चिंता, अंतरद्वन्द्व, हनुमान का ऊर्ध्वगमन, विभीषण की मंत्रणा, जांबवान् की सलाह, राम का आराधन संकल्प, पदमहरण, देवी स्तुति और वर प्राप्ति। इसमें संघर्षरत मानवता के लिए अन्याय अत्याचार का विरोध, अंतरद्वन्द्व, नारी प्रेरणा की स्त्रोत, स्वातंत्र चेतना, मनोवैज्ञानिकता, विश्व विजय की भावना और अपराजेयता अडिग शक्ति सत्यवादिता आदि भावों को अभिव्यंजित किया गया है।

राम की शक्ति पूजा के राम ईश्वरीय धरातल से उतरकर सहज मानवीय धरातल पर रावण के साथ युद्ध रत है। मानव के समान ही जय पराजय को

राम अपने जीवन को धिक्कारते हुए है दिखाई देते है लेकिन अडिग शक्ति द्वारा पुनः अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उद्यत हो जाते है —

बुद्धि के दुर्ग पहुंचा विद्युत— गति हत चेतन
राम में जागी स्मरति हुए सजग पा भाव प्रमन
'यह है उपाय' कह उठे राम ज्यों मंद्र मंद्रित
घन कहती थी माता मुझे सदा राजीव नयन
दो नीलकमल है शेष अभी यह पुरश्चरण
ज्यपूरा करता हूं देकर मात एक नयन
कहकर देखा तूणीर ब्रह्मशर रहा झलक
ले लिया हस्त लक —लक करता वह महा फलक
ले अस्त्र थाम कर दक्षिण कर दक्षिण लोचन
लिए अर्पित करने को उद्यत हो गए सुमन
जिस क्षण बंध गया बेधने को दृग दृढ़ निश्चय
कांपा ब्रह्मांड हुआ देवी का त्वरित उदय
साधु साधु साधक धीर धर्म— धन धान्य राम!
कह लिया भगवती ने राघव का हस्त थाम
होगी जय, होगी जय, है पुरुषोत्तम नवीन!
कह महाशक्ति नाम के बदन में हुई लीन १३

समग्रतः कह सकते है कि राम की शक्ति पूजा मानव के लिए अपराजेय जीवन शक्ति की शिक्षा देने वाली अभूतपूर्व कविता है। यदि आज विद्यार्थीगण इस अपराजेय अडिग शक्ति को अपने जीवन में ढाल कर अपने गंतव्य को प्राप्त करने के लिए बढ़ेंगे तो निश्चित ही उन्हें अपना गंतव्य प्राप्त होगा ।यही इस शोध पत्र का उद्देश्य होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१— रामस्वरूप चतुर्वेदी हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास लोक भारती प्रकाशन इलाहबाद पृष्ठ १२३

२— बच्चन सिंह हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास राधाकृष्ण प्रकाशन अंसारी मार्ग नई दिल्ली पृष्ठ ३५२

3 https://www.hindwi.org/kavita/ram-ki-shakti-puja-surykant-tripathi-nirala-kavita

4 https://www.hindwi.org/kavita/ram-ki-shakti-puja-surykant-tripathi-nirala-kavita

5 https://www.hindwi.org/kavita/ram-ki-shakti-puja-surykant-tripathi-nirala-kavita

6 https://www.hindwi.org/kavita/ram-ki-shakti-puja-surykant-tripathi-nirala-kavita

7 https://www.hindwi.org/kavita/ram-ki-shakti-puja-surykant-tripathi-nirala-kavita

8 https://www.hindwi.org/kavita/ram-ki-shakti-puja-surykant-tripathi-nirala-kavita

9 https://www.hindwi.org/kavita/ram-ki-shakti-puja-surykant-tripathi-nirala-kavita

10 https://www.hindwi.org/kavita/ram-ki-shakti-puja-surykant-tripathi-nirala-kavita

11 https://www.hindwi.org/kavita/ram-ki-shakti-puja-surykant-tripathi-nirala-kavita

12 https://www.hindwi.org/kavita/ram-ki-shakti-puja-surykant-tripathi-nirala-kavita

13 https://www.hindwi.org/kavita/ram-ki-shakti-puja-surykant-tripathi-nirala-kavita

❑❑❑

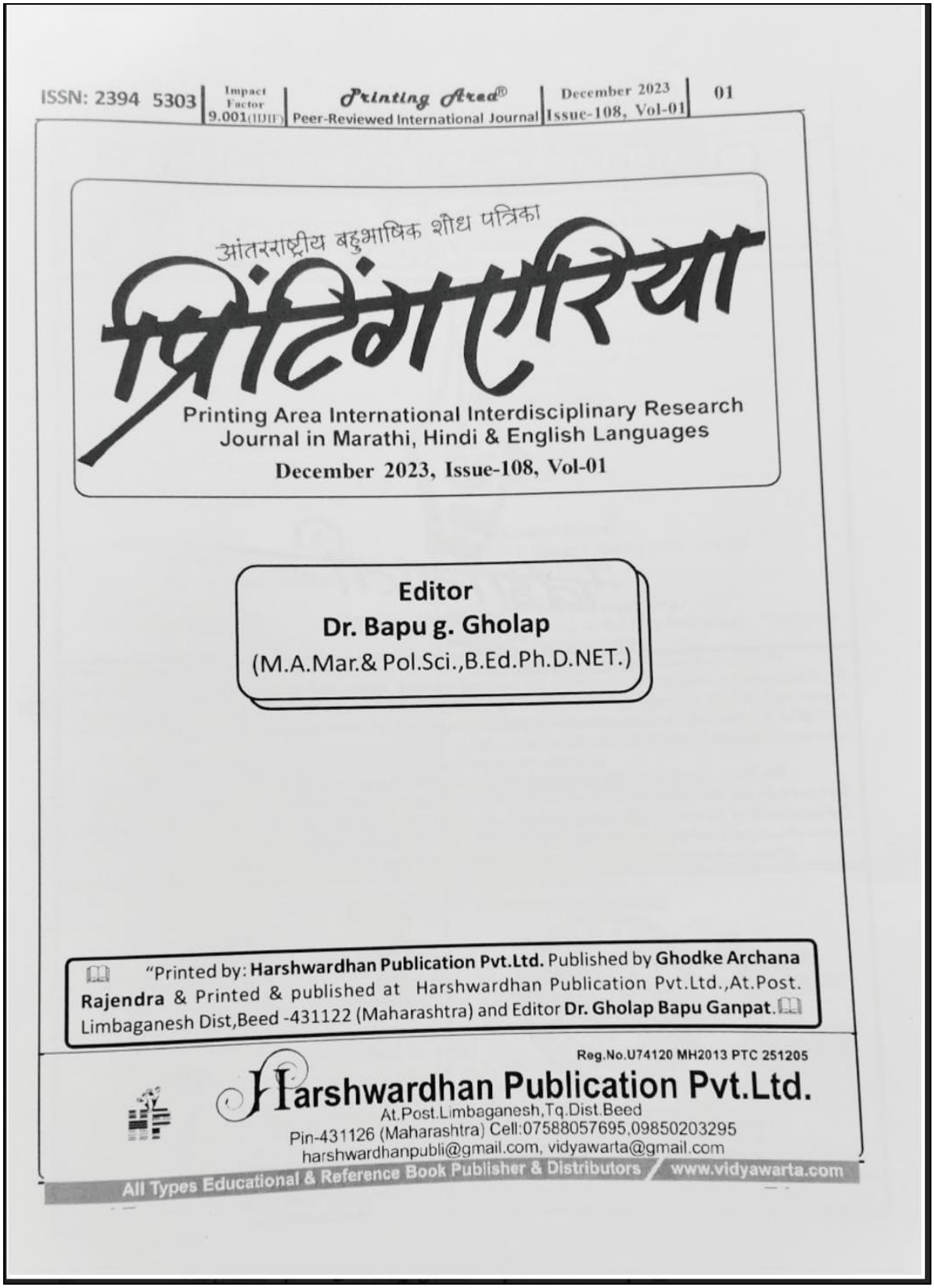

ISSN: 2394 5303 | Impact Factor 9.001(IIJIF) | Printing Area® Peer-Reviewed International Journal | December 2023 Issue-108, Vol-01 | 01

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

December 2023, Issue-108, Vol-01

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

"Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Bapu Ganpat.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

27) रूसी नामों का हिंदी अनुवाद : स्वरुप और विश्लेषण
Utkarsh Dixit, Delhi ||117

28) पुस्तकालयों का डिजिटल युग में प्रबंधन: एक चुनौती
गौरव अग्रवाल, दयालबाग, आगरा, (यूपी) ||119

29) किशोर कल्पनाकांत और उनका प्रकृति वर्णन
कल्याण सिंह चारण, रतनगढ़ ||122

30) वर्तमान में भारतीय सामाजिक परिवेश में आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक....
प्रो. सीमा रानी, डॉ. कमल सिंह, मंडी, धनौरा ||126

31) सार्वजनिक उपक्रम में प्रबंधन का महत्व
डॉ. डी. डी. टंडन, कटघोरा, छत्तीसगढ़ (भारत) ||132

32) अज्ञेय की प्रतीक योजना
डॉ. अनीता, बरेली, उत्तर प्रदेश ||141

33) ठुमरी का बालीवुड फिल्मों में उपयोग
Dr. Neelakshi Tuli, Jammu- Tawi ||148

34) अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में ग्रामीण जीवन की समस्याएँ
प्रा. डॉ. सूर्यकांत माधवराव दळवे, शिराठोण, जि. धाराशिव ||153

35) राष्ट्रीय हित की आवधारणा
डॉ. नीतु कुमारी, रांची ||155

36) कामगार चळवळीसाठी लढणारे : भाई मनोहर कोतवाल
प्रा. डॉ. शिवाजी महादेव होडगे, मुरगूड ||157

37) हिन्दी के प्रमुख संत कवियों की दार्शनिक विचारधारा
डॉ. सोहन लाल, गुडामालानी (बाडमेर) राज. ||161

38) साहित्यिक अभिरुचि का विकास और हिंदी पत्रिकाएं
लक्ष्य सिंह चौधरी, बदायूँ ||167

39) Harmonizing Heritage: Bridging the Past and Present through a....
Romita R. Swarup, Ahmedabad, India ||172

32

अज्ञेय की प्रतीक योजना

डॉ. अनीता
असिस्टेंट प्रोफेसर
साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय,
बरेली, उत्तर प्रदेश

कविता में किसी भी बात की प्रभावोत्पादकता और रसात्मकता को बढ़ाने के लिए किसी बात को सीधे–सीधे न कह कर जब कुछ वक्रता के साथ कहीं जाती हैं जिससे कथन की संवेदनशीलता और वक्ता की वाक् चातुर्यता प्रगट होती है, तब उस वक्रता को प्रतीक कहते हैं।

प्रतीक शब्द अंग्रेजी के 'सिंबल' शब्द का पर्यायवाची रूप है और आधुनिक काव्य में प्रतीक प्रयोग की प्रेरणा अंग्रेजी काव्य से ग्रहण की गई हैं। प्रतीक का व्युत्पत्तिपरक अर्थ है– ''प्रतीयते प्रत्येति व इति प्रतीक:'' अर्थात् वह वस्तु जो किसी अन्य वस्तु का बोध कराएँ। काव्य की कलात्मकता ही कवि को विशिष्ट बनाती है। कवि इसी कलात्मकता के आधार पर सूचना एवं भाव प्रधान अनुभूतियों को ऐसी वाणी प्रदान करता है जिसे व्यक्त करने में भाषा असमर्थ हो जाती है। अत: कवि ऐसी ही भावप्रधान अनुभूतियों के सम्यक अभिव्यक्ति के लिए जिसे माध्यम बनाता है, वह है– प्रतीक योजना अर्थात किसी अदृश्य या अभिव्यक्त सत्ता के दृश्य संकेत भर को प्रतीक कहते हैं।

प्रतीक की परंपरा बहुत पुरानी हैं। मनुष्य ने अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए सबसे पहले प्रतीकों का सहारा लिया। प्रतीक चिन्ह के जरिए उसने लिखने का तरीका निकाला। वेदों और पुराणों में पशु–पक्षियों को देवताओं की सवारियों के प्रतीक रूप में देखा गया हैं, मध्यकाल में भी अनेक प्रकार के प्रतीकात्मक चिन्हों का प्रयोग किया जाता रहा है जैसे ऐतिहासिक स्मारकों और मन्दिरों पर बनी मूर्तियाँ आदि। इसी प्रकार आधुनिक काल में भी राष्ट्रीय चिन्हों को प्रतीकों के रूप में जाना जाता है इसके अतिरिक्त रंगों को भी प्रतीक रूप में व्यक्त किया जाता है, जैसे– हरा रंग शांति का प्रतीक, सफेद रंग पवित्रता का प्रतीक और लाल रंग खतरे का प्रतीक। सड़कों पर यातायात को नियंत्रित व संचालित करने के लिए भी हरे–लाल–पीले बत्तियों और विभिन्न प्रकार के संकेतों को प्रतीक रूप में प्रयोग किया जाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो मनुष्य का पूरा जीवन प्रतीकों से भरा है। वह प्रतीकों के माध्यम से सोचता है, विचारों को बुनता है तत्पश्चात भावों की अभिव्यक्ति करता है। ऐसे में साहित्य भला कहाँ तक अछूता रह पाता। साहित्य में हर युग का कवि अपने–अपने ढंग से, नए–नए प्रतीक गढ़ता रहा है और कविता में चारुता लाने का प्रयास करता रहा है।

एक आंदोलन रूप में साहित्य में 'प्रतीकवाद' का आरंभ १९ वीं शताब्दी के अंत में यानी १८८५ ई. में फ्रांस में शुरू हुआ। यथार्थवाद के गिरफ्त में बंधे रचनाकारों ने वस्तु–स्थिति को उसी रूप में देखा जैसा वे वास्तव में दिखते थे। शीघ्र ही रचनाकारों का यथार्थवाद से मोहभंग हो गया। उनकी दृष्टि में साहित्य का उद्देश्य वाह्य जगत का हू ब हू चित्रण करना नहीं है, बल्कि साहित्य का उद्देश्य कला के अंतर्मन को चित्रित कर सौंदर्यानुभूति का विस्तार व विकास करना है। इसके लिए रचनाकारों ने प्रतीकों के माध्यम से पूरे अलंकारिक व कल्पना शक्ति का प्रयोग करते हुए रचना करना प्रारंभ कर दिया। इस प्रकार प्रतीकवाद का जन्म हुआ और यही प्रवृत्ति हिंदी साहित्य में देखने को मिलने लगी। हिंदी साहित्य में प्रतीकों का प्रयोग केवल प्रयोगवादी युग में ही नहीं हुआ बल्कि उसका प्रचलन आदिकालीन साहित्य से लेकर समकालीन साहित्य तक नए–नए ढंग से होता रहा है, जैसे– आदिकालीन साहित्य में रहस्यवाद व संध्या भाषा को प्रतीक रूप में भी देखते हैं। आधुनिक कालीन साहित्य में प्रतीक प्रयोग की बहुत सशक्त परंपरा दिखाई देती है, छायावादी कवियों में महादेवी वर्मा ने प्राय: अपने सभी कविताओं में प्रतीकों के माध्यम से अपने को निस्सीम जगत से जोड़ने तथा अपने मन के पीड़ा को

७. वही, पृष्ठ— २९.
८. वही, पृष्ठ— ३१—३२.
९. अज्ञेय, क्योंकि मैं उसे जानता हूँ, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, वाराणसी ५, प्रथम संस्करण, १९७०, पृष्ठ— ४७—४८.
१०. विद्यानिवास मिश्र (संपादक), आज के लोकप्रिय हिंदी कवि—१० 'अज्ञेय', राजपाल एंड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, संस्करण, २००१, पृष्ठ— ९५.
११. अज्ञेय, पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ,राजपाल एंड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, १९७४, पृष्ठ— २९.
१२. अज्ञेय, चिंता, राजपाल एंड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली—६, द्वितीय संस्करण, १९७०, पृष्ठ— २५.
१३. वही, पृष्ठ— २६.
१४. वही, पृष्ठ— २७.
१५. अज्ञेय, पूर्वा, राजपाल एंड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, १९६५, पृष्ठ— ७०
१६. वही, पृष्ठ— ११८
१७. वही, पृष्ठ— २४४.
१८. वही, पृष्ठ— २४४.
१९. वही, पृष्ठ— २४६—२५०.
२०. विद्यानिवास मिश्र (संपादक), आज के लोकप्रिय हिंदी कवि—१० 'अज्ञेय', राजपाल एंड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, संस्करण, २००१, पृष्ठ— ५०.
२१. वही, पृष्ठ— ९०—९१.
२२. अज्ञेय, बावरा अहेरी, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली—६, १९७२, पृष्ठ— ३१.
२३. वही, पृष्ठ— ५२.
२४. अज्ञेय, इंद्रधनु रौंदे हुए ये, सागर और गिरगिट, सरस्वती प्रेस—इलाहाबाद, बनारस, प्रथमावृत्ति, १९५७, पृष्ठ— २५.
२५. वही, पृष्ठ— ३३.
२६. अज्ञेय, महावृक्ष के नीचे, राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९७४, पृष्ठ— २२.
२७. अज्ञेय, इंद्रधनु रौंदे हुए ये, सागर और गिरगिट, सरस्वती प्रेस—इलाहाबाद, बनारस, प्रथमावृत्ति, १९५७, पृष्ठ— ६२.
२८. विद्यानिवास मिश्र (संपादक), आज के लोकप्रिय हिंदी कवि—१० 'अज्ञेय', राजपाल एंड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, संस्करण, २००१, पृष्ठ— ७७—७८.

33

ठुमरी का बालीवुड फिल्मों में उपयोग

Dr. Neelakshi Tuli
Devi Dwara Lane,
Below Purani Mandi, Jammu- Tawi

शोध सारांश :

ठुमरी भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक गायन विद्या है। यह उप शास्त्रीय संगीत के अंतर्गत आती है। शास्त्रीय संगीत के कलाकार अपने गायन का समापन ठुमरी गायन से करते हैं। ठुमरी एक भाव प्रधान गीत है। इसमें श्रृंगार रस की प्रधानता होती है। ठुमरी की उत्पत्ति लखनऊ के नवाब वाजिद अली शाह ने की थी। इनको अख्तर पिया के नाम से भी जाना जाता था। ठुमरी में राग की शुद्धता की तुलना में भाव सौंदर्य को अधिक महत्व दिया जाता है।

ठुमरी ब्रज शैली की रचना मानी जाती है। ठुमरी को दो भागों में बांटा जाता है। पूरबी अंग की ठुमरी और पंजाबी अंग की ठुमरी। पूरबी अंग की ठुमरी को भी दो भागों में बांटा जाता है। लखनऊ अंग की ठुमरी और बनारस अंग की ठुमरी।

ठुमरी गायन में राधा कृष्ण की प्रेम लीलाओं का वर्णन मिलता है। ठुमरी—खमाज, देस, तिलक—कामोद, भैरवी, पीलू, झिंझोटी, जोगिया आदि रागों में गाई जाती है। ठुमरी दीपचंदी, झपताल आदि तालों में गाई जाती है। ठुमरी की बंदिश बहुत ही छोटी होती है। इसमें छोटी—छोटी तानें अधिक गाई जाती है। मुख्यता जब गायक ठुमरी गाता है। इसेमें दो लयों का प्रयोग होता है। इसमें सबसे पहले विलम्बित या मध्य लय से प्रारम्भ करते हैं तब इसके साथ जत, दीपचंदी जैसी तालों का प्रयोग होता है और जब द्रुत लय में आते है तो दादरा, कहरवा तालों का प्रयोग होता है। इसमें तबला वादक जब ताल का ठेका बजाता है तो छोटे—छोटे टुकड़े सुंदर बोल की तिहाइया, लग्गियां लगाकर इसे और श्रृंगारिक, मधुर बनाने का प्रयास

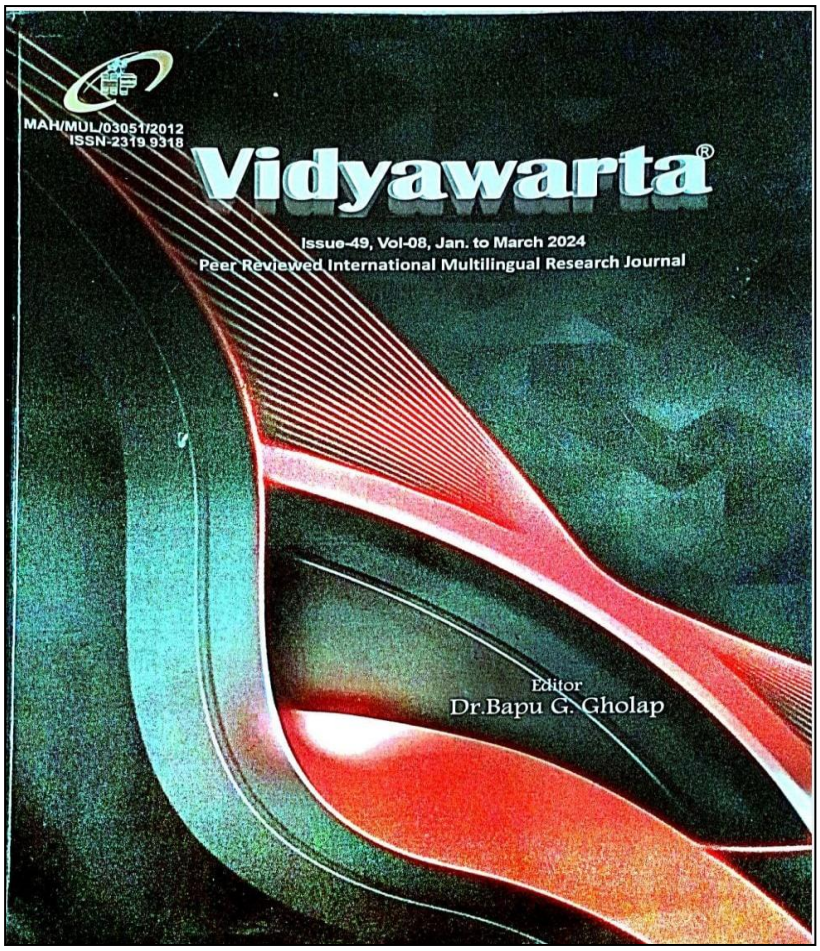
MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318
Vidyawarta®
Issue-49, Vol-08, Jan. to March 2024
Peer Reviewed International Multilingual Research Journal
Editor
Dr.Bapu G. Gholap

INDEX

01) Indian writing in English: a Post Colonial Perspective
DANGE A. R., Degloor (MH) ||09

02) EFFECT OF PARENTING STYLES ON DEVELOPMENT PROCESS OF CHILDREN
Deepmala Garg, Dr. Jharna Gupta, Chandpur, Ballabhgarh ||15

03) Evolution of Physique in Youth Combat Athletes: Morphological....
Dr. Priti Verma, Bareilly ||21

04) Navigating Change towards the Socioeconomic Landscape of....
Dr. Preeti Joshi, Rambabu Meena, Jaipur ||25

05) भारतातील नैसर्गिक संसाधनाची उपलब्धता
डॉ. एस. टी. सामाले, पाथरी, जि. परभणी ||33

06) शिक्षक शिक्षा में गुणवत्ता की चुनौतियाँ व राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२०
आशुतोष कुमार विश्वकर्मा, वर्धा ||36

07) स्त्री विमर्श के आइने में मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास
रंजन कुमार, हजारीबाग ||40

08) नारी शिक्षा और सशक्तिकरण
संदीप कुमार जायसवाल, डॉ. कृष्ण कुमार, महराजगंज, (उ.प्र.) ||42

09) बी. एड. छात्राध्यापकों की शिक्षण सक्षमता एवं सृजनात्मक शिक्षण....
DR SATISH KUMAR, Rudrapur, Khajani, Gorakhpur (U.P.) ||45

10) मुगलकालीन अवध सूबे में कृषि एवं कृषकों की स्थिति
सत्य प्रकाश वर्मा, डॉ. शाहिद परवेज, अकबरपुर, (उ.प्र.) ||54

11) बिहार राज्य के मधुबनी जिले के हाई स्कूल में अध्ययनरत विद्यार्थियों....
VIJAY KUMAR MAHTO, JHARKHAND ||58

12) पण्डित दीनदयाल उपाध्याय जी का एकात्म मानववाद की अवधारणा....
उदय प्रताप कुशवाहा, प्रो. राजेश कुमार सिंह ||64

13) स्थलाकृतिक विश्लेषण एक भौगोलिक अध्ययन कुमाऊँ हिमालय....
Dr. LALIT KUMAR, BHOJPUR, FARRUKHABAD, (U.P.) ||67

a shift in child-rearing practices. Most people learn parenting practices from their upbringing and as they navigate parenthood, which adds to the complexity. There is higher pressure to be the "perfect parent" nowadays. The prevalence of conflicting parenting advice online leaves parents confused and self-critical.

However, every generation believes they shoulder more parenting challenges than their predecessors. The "good old days" tend to be viewed through rose-colored glasses because of the lack of firsthand parenting experiences from one's childhood.

CONCLUSION :

On the above description, we can say that parenting is an art which affects the whole life and overall development of the children.

Positive parenting helps the child face non-social or social problems. Positive parenting is required for early cognitive development, emotional balance, and the maturation of thought. While negative, hostile parenting leads to depression and social and cultural problems.

Parenting styles and parental feeding behaviors can significantly contribute to the risk of their child or adolescent becoming overweight or obese. Identifying which parenting style and parental feeding behavior the primary caretaker identifies with can be of help to the nurse in developing a family-centered approach towards achieving a healthier lifestyle.

REFERENCES:

- Maria Jose Rodrigo, Sonia Byrne & Beatriz Rodriguez, (2014), Parenting Styles and Child Well - Being 2173-2196
- Marie Miguel,(2021) ' How parenting styles affect child development '
- Joel A Muraco; Wendy Ruiz , Rebecca Laff, (2020) 'Baumrind's parenting styles'
- Preksha Thakkar, (2019), Parenting Styles and it's Impact on Child Development
- Sanober Khanum, Rabia Mushtaq, Rabia Danish Kamal, Zuhaib Nishtar, (2023)
- Stephenie Gutzmer, Rohnda Kelloway, (2021), (Types of Parenting Styles).

❑❑❑

03

Evolution of Physique in Youth Combat Athletes: Morphological Variations across Age Group

Dr. Priti Verma
Assistant Professor,Department of Physical Education,Sahu Ram Swaroop Mahila Mahavidyalaya, Bareilly

Abstract :

The objective of this study was to investigate and document the morphological changes, including body composition, bone mineral density, muscle development, and somatotype, across different age groups (less than 14, 15, 16 and 17 separately) of boys engaged in combat sports. Stratified sampling technique was used to divide all the combat males age ranged between 13 to 17 years in different strata i.e. less than 14, 15, 16 and 17 separately. To fulfill the objectives of the study for significant outcomes a total number of 120 male combative sports players 30 participants for each age category belongs to Boxing, Judo, Karate and Wrestling of different Kendriya Vidyalayas from Lucknow Region were carried for the present study. The observed variation in weight (30.00 kg to 98.00 kg) and height (145.00 cm to 174.00 cm) among boys engaged in combat sports were indicative of their varied physical attributes. The sample's mean weight of 50.8214 kgs and height of 160.7500 cm pointed out to a moderate degree of variation. The significant diversity in the leg length (mean: 91.7679 cm; range: 77.00 cm to 103.00 cm) might had been caused by variations in the proportions of the lower limbs among the participants. Studies demonstrated how morphological alterations are dynamic and

morphological traits and their implications for training methods in the context of combat sports.

These results could be expanded upon by more study or analysis to provide more in-depth understandings of age-related trends or relationships with performance measures. Adapt and elaborate on these ideas in light of the particular environment and area of study that you are studying.

References :

1. Claessens, A. L., Lefevre, J., Beunen, G., & Malina, R. M. (1999). The contribution of anthropometric characteristics to performance scores in elite female gymnasts. Journal of Sports Medicine & Physical Fitness, 39(4) pg No. 355-360.
2. Garret Henry E., "Statistics in Psychology and Education" Bombay: Feffer and Simons Ltd. ,1981.
3. Horswill, C. A. (1992). Applied physiology of amateur wrestling. Sports Medicine, 14(2), pg No. 114- 143.
4. Janssen, I., Heymsfield, S. B., Wang, Z., & Ross, R. (2000). Skeletal muscle mass and distribution in 468 men and women aged 18–88 yr. Journal of Applied Physiology, 89(1), pg No. 81-88.
5. Krzysztof Buœko, Anna Pastuszak, Ewa Kalka., (2017) Body composition and somatotype of judo athletes and untrained male students as a reference group for comparison in sport., Biomedical Human Kinetics :9,pg No. 7–13.
6. McCall, Robert B. "Fundamental Statistics for the Behavioral Sciences" 5th ed. New York: Harcourt Brace Jovanovich, 1990.
7. Verma J. Prakash, "Sports Statistics" Gwalior: Venus Publications, 2000.

❑❑❑

04

Navigating Change towards the Socioeconomic Landscape of Tribal Women in Rajasthan

Dr. Preeti Joshi
Assistant Professor (Senior Scale), University Law College, Department of Law, University of Rajasthan, Jaipur

Rambabu Meena
Research Scholar, Department of Law, University of Rajasthan, Jaipur

ABSTRACT :

This study aimed to provide a comprehensive understanding of the issues facing indigenous women in Rajasthan. Human rights were used as a lens through which to examine a range of concerns related to their social, political, and economic growth. Rajasthan is the largest state in India, and its tribal people are a significant part of the culture there. The state's various indigenous communities can be found in a wide range of landscapes and climates, and their members practise a wide range of customs and beliefs.

There are a lot of different tribes living in Rajasthan, but some of the poorest and least developed are the Damor, Patelias, Sahariyas, Gharasia, Bhil, and Meena. There is a lack of education and respect for tribal women because of the region's lack of progress. The most pressing issue for these ladies is the persistent gender gap. Some of the issues tribal women experience include lack of education, abuse at home, financial hardships, lack of career opportunities, social isolation, and discrimination on the basis of gender.

Moreover, the tribal economy and its inhabitants are now more exposed than ever to non-tribals and their social, political, and ethical

Dr. Beena Yadav

Research Inspiration: An International Multidisciplinary e-Journal
ISSN: 2455-443X
Vol. 9, Issue-I, Dec. 2023

Index

S.No.	Title	Author Name	Subject	Page No.
0	Cover Page- Vol.9, Issue– I, Dec. 2023	Journal	Article	0
01	Index- Vol.9, Issue– I, Dec. 2023	Journal	Article	1
02	वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गांधी के विचारों की प्रासंगिकता	Dr. Nita Chauhan	Article	01-06
03	**The Theme of Alienation in Patrick White's Literary Works**	**Dr. Beena Yadav**	**Article**	07-11

Research Ambition e-Journal
Vol.9, Issue-I, May 2024

RESEARCH AMBITION

An International Multidisciplinary e-Journal

Vol.09, Issue-I, May 2024

ISSN: 2456-0146

Editor-in-Chief
Dr. Raj Kumar Verma

Published By: Welfare Universe
Home Page: www.researchambition.com
Email: publish2017@gmail.com

Research Ambition
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer-reviewed & Open Access) **Journal home page:** www.researchambition.com
ISSN: 2456-0146, Vol. 09, Issue-I, May 2024

Index

S.No.	Title	Author Name	Subject	Page No.
0	Cover Page, Vol.9, Issue– I, May 2024	Journal	Article	00
01	Index, Vol.9, Issue– I, May 2024	Journal	Article	i
02	African American Folklore in the Novels of Toni Morrison	Dr. Beena Yadav	Article	01-06
03	Exploring regulatory framework related to green energy: An Analytical study	Dr. Rubi Gupta	Article	07-16
04	महिलाओं के उभरते व्यक्तित्व में विधि की भूमिका 2024 के संदर्भ में एक सामाजिक विधिक अध्ययन (The role of law in the emerging personality of women: A Socio-legal study in the context of 2024)	Manju Sony	Article	17-28

****

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 08, August 2023

Reflection on Educational Scenario in Perspective of Human Being's Dignity

[1]Jyoti Gupta
[1]Assistant Professor, Education Department, Sahu Ram Swaroop Mahila Mahavidyalaya, Bareilly

Abstract

Human dignity and moral values are key aspects of every society. These attributes play an important role in development of the society and the nation. An individual possessing these attributes is a boon to the society and nation. It leads the society to a better future. But recent developments taking place around us shows a significant decline in the concept of human dignity and moral values. Rapid advancement of science and technology and increasing materialistic attitude have influenced the core of the heart of the society. Education is not fulfilling its noble objectives and is not being able to stop the society going astray from its basic purpose and as a result society is losing dignity and values. People search for peace in materialistic things and fail to find real peace. Many malpractices are being exercised in the pursuit of materialistic pleasures. People quarrel and do not hesitate even kill their near and dear ones for materialistic things. Hearts are being broken and relationships are being shattered for the sake of materialistic gain. Corruption prevails everywhere, unfortunately, even in the education system. Education is meant to lead the mankind as a leading star in upholding human dignity and moral values. But it is not so. The education system is not delivering its desired results to the society. Education stakeholders have failed to set up an educational scenario to resolve all these issues. As a result, human dignity is declining rapidly. Through this article, the author tries to highlight the causes and suggestions to resolve such problems.

Keywords- Human Dignity, Education, Materialism, Moral Values etc.

Introduction

Human being is the best creation of God among all other creations such as fauna and flora. It is only human being who has been endowed with gift of gab, power of laughter, expressing and managing their various emotions to their dear ones like love, affection, fear, joy, happiness etc. on various occasion as **Philip James Bailey** also quoted **"Let each man think himself an act of God. His mind a though, his life a breath of God"** which also means the same as mentioned above. God has bestowed human being some specific attributes which make difference between human being and other creatures in the world. Human being, in general, also a saying, lives for others while animals live for themselves which makes the difference between the both. But, now-a-days, in this era of science and technology, this saying is going to be eliminated and human being is losing its dignity. Human being as bestowed with attribute of compassion, love, affection etc. by the supreme power are losing these attributes and behaving as animals do for the sake of their interest. Education plays an important role in cultivating the human beings' fundamental instincts in to desired form which makes the difference to other creatures. It is the aim of education to make the society and nation better and to establish a peaceful environment in the society and the nation. It is, in general, said that child is a blank slate and anything can be drawn on it whether it good or evil. Even a psychologist **J.B. Watson** has also said **"Give me a dozen healthy infants, well-formed, and my own specified world to bring them up in and I'll guarantee to take any one at random and train him to become any type of specialist I might select—doctor, lawyer, artist, merchant-chief and, yes, even beggar-man and thief, regardless of his talents, penchants, tendencies, abilities, vocations, and race of his ancestors. (1930)".** But, advanced researches in psychology has proved that child is not a blank slate and born with some specific attributes which can be modified in desired form with the help of education which can help to makes the society and nation better. But, unfortunately, now-a-days, education is not able to fulfill its

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 08, August 2023

who exercise the ill practices and close such institutions. All these things will assist in maintain moral values and human dignity.

- **Reforms in Judiciary System** – Criminal trials should be completed in speed and the guilty should be punished at the earliest. In cases of murder and rape, the guilty should be hanged to death. Rules and regulation and laws should be re studied and make some more hard laws for rape, murder, treason, forced conversion of religion etc. More courts should be established and number of judges should be increased in existing courts to resolve the cases soon. Collegium method should be finished in selection process of judges in Supreme Court and recruitment process should be made for the same. Judges should be provided some specific powers in making judgement for the cases such as murder, rape, treason, etc. These reforms may lead to develop moral values and human dignity in the society.

Conclusion - Moral values and human dignity is important aspect for survival of the society. No society can survive peacefully without maintaining human dignity and society without moral values and human dignity is not a society but a hell. For all round development of country and society and makes them much better, it is crucial to maintain moral values and human dignity. Life without values and dignity cannot be imagined and it is necessary for the existence of human being. Therefore, agencies and stakeholders of the society and nation should reflect this serious issue and try their best to maintain human dignity for bright future of the children and existence of human being.

Bibliography-

- https://www.speakingtree.in/blog/man-is-the-best-creation-of-god
- https://www.goodreads.com/quotes/1010662-give-me-a-dozen-healthy-infants-well-formed-and-my-own
- United Nations, Department of Economic and Social Affairs, Population Division (2022). World Population Prospects 2022: Summary of Results. UN DESA/POP/2022/TR/NO. 3. Retrieved from https://www.un.org/development/desa/pd/sites/www.un.org.development.desa.pd/files/undesa_pd_2023_policy-brief-153.pdf
- https://www.worldometers.info/world-population/india-population/
- https://www.kailasheducation.com/2021/08/mulya-arth-paribhasha-prakriti-visheshta.html
- https://timesofindia.indiatimes.com/city/chandigarh/who-is-jalebi-baba-convicted-for-raping-over-100-women/articleshow/96874204.cms
- https://www.arthparkash.com/manipur-kuki-girls-nude-video-viral
- https://www.ndtv.com/india-news/in-manipur-horror-2-women-paraded-naked-on-camera-allegedly-gang-raped-4223105
- The Amar Ujala dated 31/07/2023 on page no. 11
- https://testbook.com/question-answer/a-school-is-a-miniature--5e71a932f60d5d6bc4c9120d
- https://www.financialexpress.com/india-news/363-sitting-mlas-and-mps-have-criminal-cases-against-them-bjp-tops-list-with-83-adr/2315943/
- **Pachauri, G. (2019)**. **Philosophical foundation of Education**. Meerut: R. Lal Book Depot, p-383-412.

Dr. Ruchi Agarwal

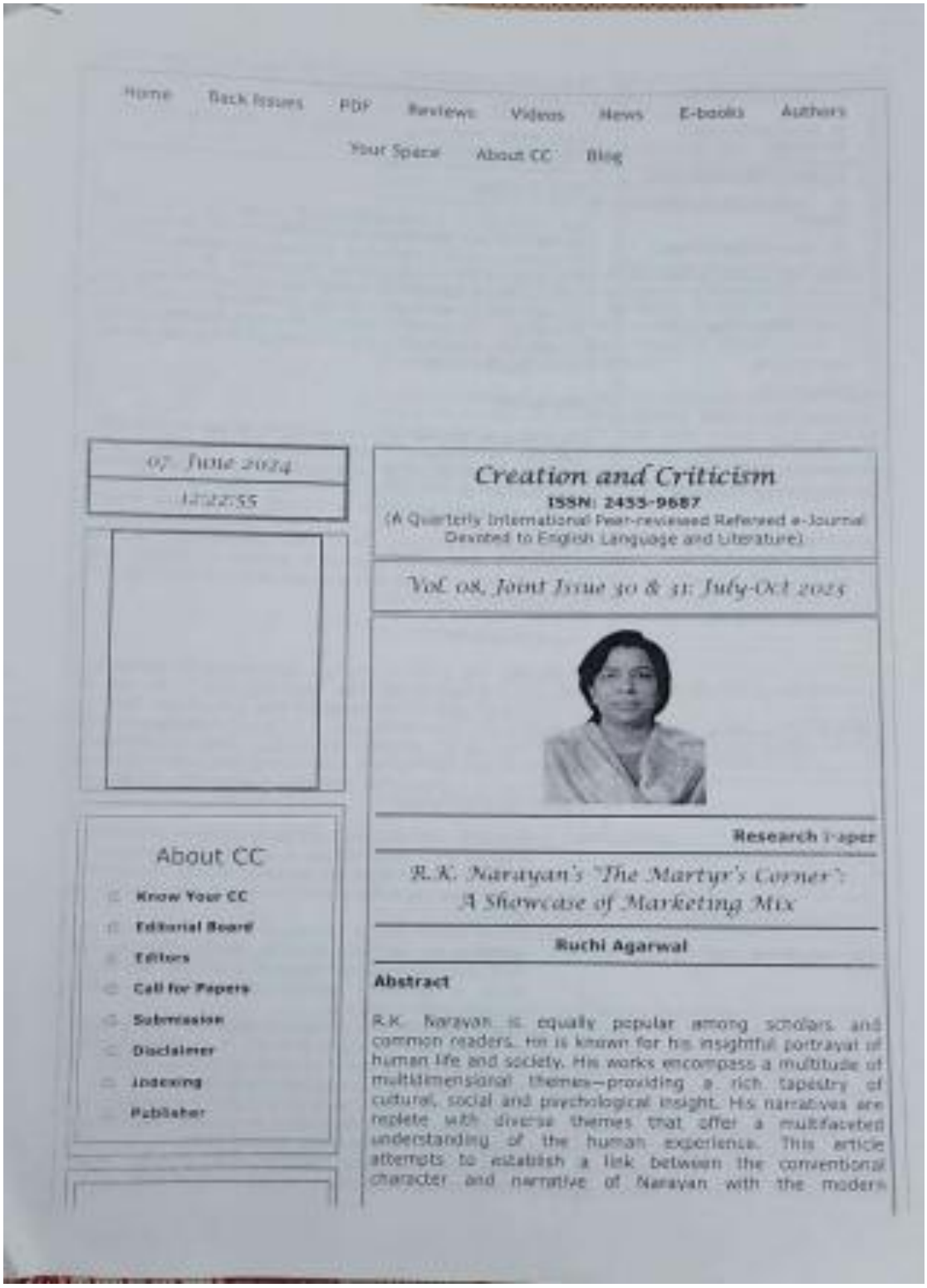

Home Back Issues PDF Reviews Videos News E-books Authors
Your Space About CC Blog

07 June 2024
12:22:55

About CC
- Know Your CC
- Editorial Board
- Editors
- Call for Papers
- Submission
- Disclaimer
- Indexing
- Publisher

Creation and Criticism
ISSN: 2455-9687
(A Quarterly International Peer-reviewed Refereed e-Journal Devoted to English Language and Literature)
Vol. 08, Joint Issue 30 & 31: July-Oct 2023

Research Paper

R.K. Narayan's 'The Martyr's Corner': A Showcase of Marketing Mix

Ruchi Agarwal

Abstract

R.K. Narayan is equally popular among scholars and common readers. He is known for his insightful portrayal of human life and society. His works encompass a multitude of multidimensional themes—providing a rich tapestry of cultural, social and psychological insight. His narratives are replete with diverse themes that offer a multifaceted understanding of the human experience. This article attempts to establish a link between the conventional character and narrative of Narayan with the modern

Home Back Issues PDF Reviews Videos News E-books Authors

Your Space About CC Blog

14 June 2024

13/07/40

Creation and Criticism

ISSN: 2455-9687

(A Quarterly International Peer-reviewed Refereed e-Journal Devoted to English Language and Literature)

Vol. 09, Joint Issue 32 & 33: Jan-April 2024

New Release

A Companion to Assistant Teacher (LT Grade Uttarakhand) Examination

Ruchi Agarwal

Sudhir K Arora. *A Companion to Assistant Teacher (LT Grade Uttarakhand) Examination*. Bareilly: Prakash Book Depot, 2024. Pp. 312, Price: Rs. 425/-, ISBN: 978-93-91984-64-9

About CC

- Know Your CC
- Editorial Board
- Editors
- Call for Papers
- Submission
- Disclaimer
- Indexing
- Publisher

Dr. Divya Yadav

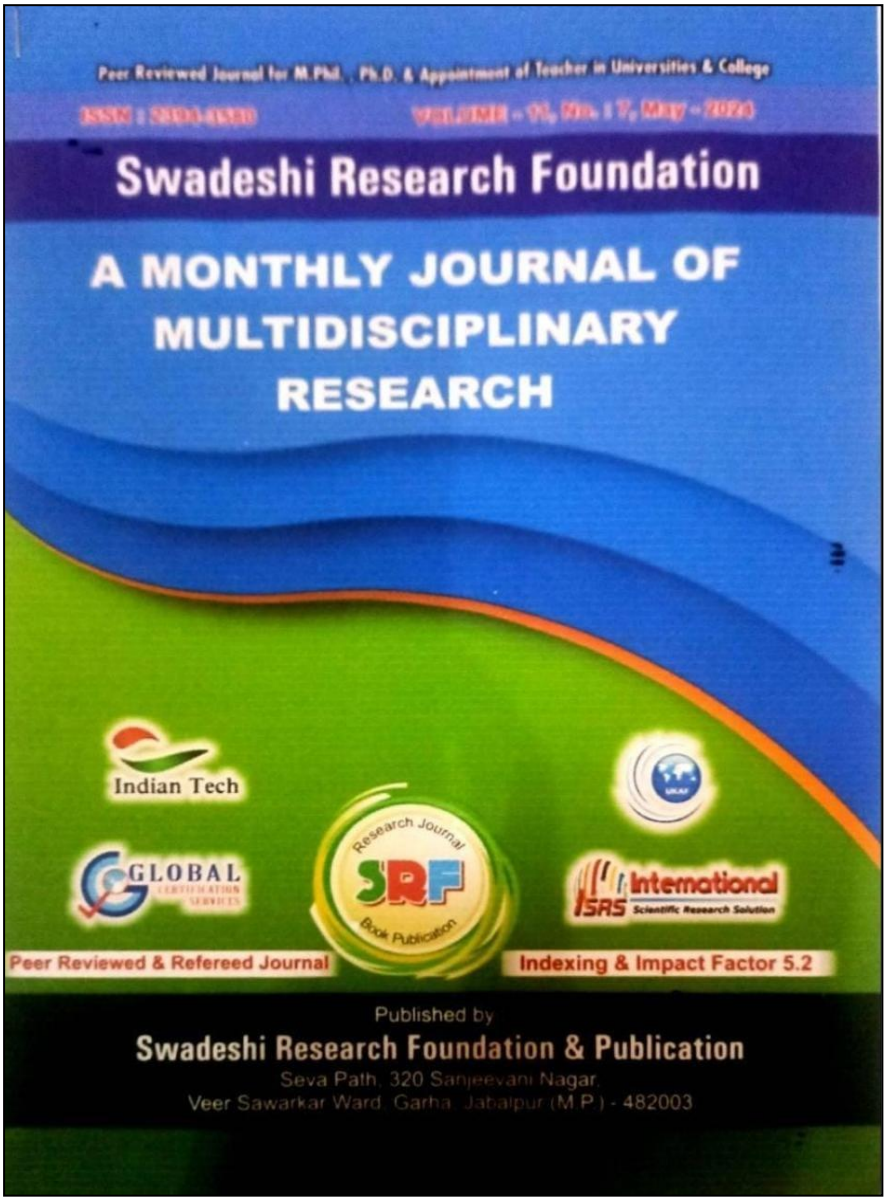

CONTENTS

S. No.	Paper Title	Author Name	Page No.
1	Digital Marketing : Opportunities and Challenges	Dr. Ashok Soni Shailendra Solanki	1-10
2	Legal Status of Refugees under International Law with Special Reference to Rohingya Crisis	Dhirendra Kumar Dubey Arvind Kumar	11-15
3	Labour Welfare Protection under International Law	Mohammad Faiz Khan Pradeep Verma	16-21
4	Raja Ram Mohan Roy: The Modern India's Renaissance	Dr. Amrita Kumari	22-27
5	Women at Work in G20 : Progress and Policy Action	Dr. Sapna Sharma	28-31
6	Tourism Development in Madhya Pradesh	Dr. G.L. Khangode Sonali Mewada	32-34
7	Impact of Information Technology on Indian Economy and Society	Mrs. Paridhi Soni Dr. Ashok Soni	35-40
8	Women Empowerment and its Impact on Social Values	Vandana Sharma	41-46
9	Transforming Lives: Reviewing Various Agencies and Programmes in Empowering and Rehabilitation of Persons with Disabilities in India	Dr. Vidya Kumari	47-54
10	To Study the Challenge of Workers in the Glass Industry with Special Reference to Firozabad	Chirag Jadon	55-62
11	Exploring Identity, Resilience and Change in Tribal Literature	Divya Kumari	63-65
12	Developing Age-Appropriate Yoga Programs for Different Grade Levels in Physical Education	Soumava Sarkar Dr. Vikas Vaishnav	66-68
13	Tagore's Educational Legacy: Case Studies from Schools Inspired By His Ideas	Ranjit Patra Dr. Brahmanand Nayak	69-71
14	Need of the Hour on Sustainable Development through Natural Resources in India	Sanjay Kumar Soni	72-79
15	The Role of Water in Sustaining Agriculture	Sana Siddique Aditya Singh Baghel Lekhnarayan Sahu Brahmanand Sharma	80-85
16	Dalits' and Status of Dalit Women in Koderma District in Jharkhand	Dr. Deepak Kumar	86-90
17	An Analysis of Economic Growth and Unemployment in Punjab	Swati Verma	91-98
18	NEP-2020 : Multidisciplinary Approaches in Higher Education Institution	Dr. Divya Yadav	99-100

Swadeshi Research Foundation A Monthly Journal of Multidisciplinary Research
International Peer Reviewed, Refereed, Indexing & Impact Factor - 5.2, Ex UGC S.N. 4990
ISSN : 2394-3580, Vol. - 11, No. - 7, May - 2024, Special Issue English 2nd

2024

NEP-2020 : Multidisciplinary Approaches in Higher Education Institution

Dr. Divya Yadav

Assistant Professor (Govt.), Education Department,

Sahu Ramswaroop Mahila Mahavidyalaya, Bareilly, Uttar Pradesh

The education industry in india is going through its transformation phase in demand which posed by a world wide economy.

The NEP 2020 who to transform India into a world wide super power with universal access to the best education.

We all know that National Education Policy 2020 is invision as ponakend shift in Indian education. Its aims of holistic and multidisciplinary education and aim i.e. develop capabilities as to intellectual aspect and social, physical, moral and any other capabilities. We know that multidisplinalities is in shine in over all education system where the multidisplinarites as it is related to painting, singing and vocational education we teacher making or craft and any other is there, but slowly the focus was change into discipline but this "National Education Policy 2020" again its aim for multidisciplinary and holistic approach of education system specially higher education as well as school education.

When we say multidiscilinary and holistic education this as in line with national education policy it aims for over all capability development through various discipline as professional domain as technical or vocational studies having the knowledge of all the discipline to make the student twenty first century skill.

Higher Education and NEP-2020 key feature :-

- Gross Enrollment Ratio in higher education to be increased to 50% by 2035.
- Board based, multi-disciplinary, holistic higher education.
- Flexible curriculum with creative combination of subjects.
- Vocational education be integrated with main stream education.
- Multiple entry and exit.
- Academic Bank of Credit for digitally storing academic credits.
- Higher education institutions transform into large, well resourced, vibrant multidisciplinary institutions.
- Multidisciplinary Education & Research Universities (MERU) as per with IITs, IIMs, to be set up.
- Open and distance education, online and digital education to be promoted.
- Creation of network of institutions offering skill course through hub and spoke model.
- Promotion of indian language and knowledge.
- Start up/ inculcation center/technology development center/centers in frontier area of research strengthening greater industry academy linkages.
- Institute innovasation londls at HEI's.
- To after apprenticeship/ Internship embedded degree.

Towards a more Holistic and Multidisciplinary Education :-

- Aim to develop all capacities of human being.
- Intellectual, aesthetic, social, physical, emotional and moral in a integrated manner.
- Develop well rounded individuals that possess critical 21st century capacities in.
- Fields across the arts humanities, language, sciences, social science and professional, technical and vocational fields.
- An ethic of social engagement.
- Soft skill such as communication, discussion and debates.
- Rigorous specialization in a chosen field or fields.
- Flexible and innovative curricular of HEIs.
- Credit based course and projects in the area of community engagement and services.

- Environmental education and value based education.
- Opportunities for internship with local industry, businesses, artists crafts person.

Implementation of NEP-2020 :-

- GER, Access, Equity, Inclusion.
- Increase in access to education through alternative, pathways including distance and online learning and by extending classroom education through flexible and blended learning.
- Indian knowledge system, traditional, culture and values.
- Curriculum and pedagogy.
- Discipline competencies.
- Inter-disciplinary competencies.
- Social and life skill/happiness skills/twenty first century skills and vocational/job/ professional skill. Holistic and multidisciplinary education and multiple entry and exit.
- Enabling learning environment and learner support (mother tongue) as medium of instruction.
- Vocational education and skilling and employability.
- Establishment of linkage with industry and employers and in equivalence with NHEQF and NSQE.
- Innovative formative and summative Assessment.
- Including cases, portfolios, internships, technology-enabled assessment and e-portfolios.
- Digital education/Technology-enabled learning.
- Use of MOOC/SWAYAM/Online courses, conferencing and web technologies.
- Cross border education/ Internationalization of endorse including cross border credit transfer.

Reference :-

1. National Education Policy 2020.
2. Guideline for Transforming Higher Education institutions (HEIs) into multidisciplinary institution, UGC, September 2022.
3. Repositioning IGNOU in line with NEP 2020pdf
4. Nandini, ed. (29 July 2020). "New Education Policy 2020 Highlights School and Higher Education to see major changes" Hindustan Times.

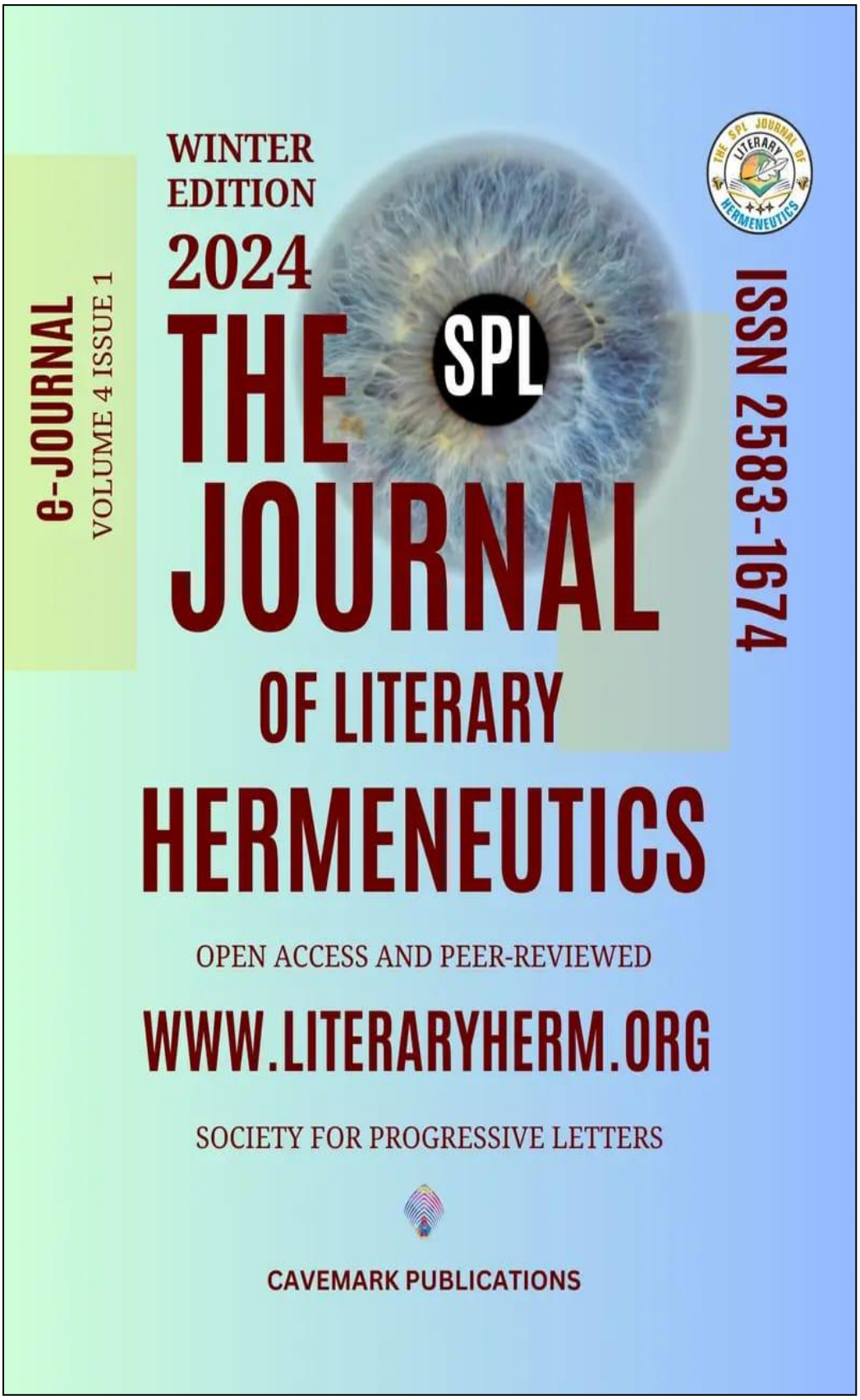
WINTER
EDITION
2024
THE
SPL
JOURNAL
OF LITERARY
HERMENEUTICS
e-JOURNAL
VOLUME 4 ISSUE 1
ISSN 2583-1674
OPEN ACCESS AND PEER-REVIEWED
WWW.LITERARYHERM.ORG
SOCIETY FOR PROGRESSIVE LETTERS
CAVEMARK PUBLICATIONS

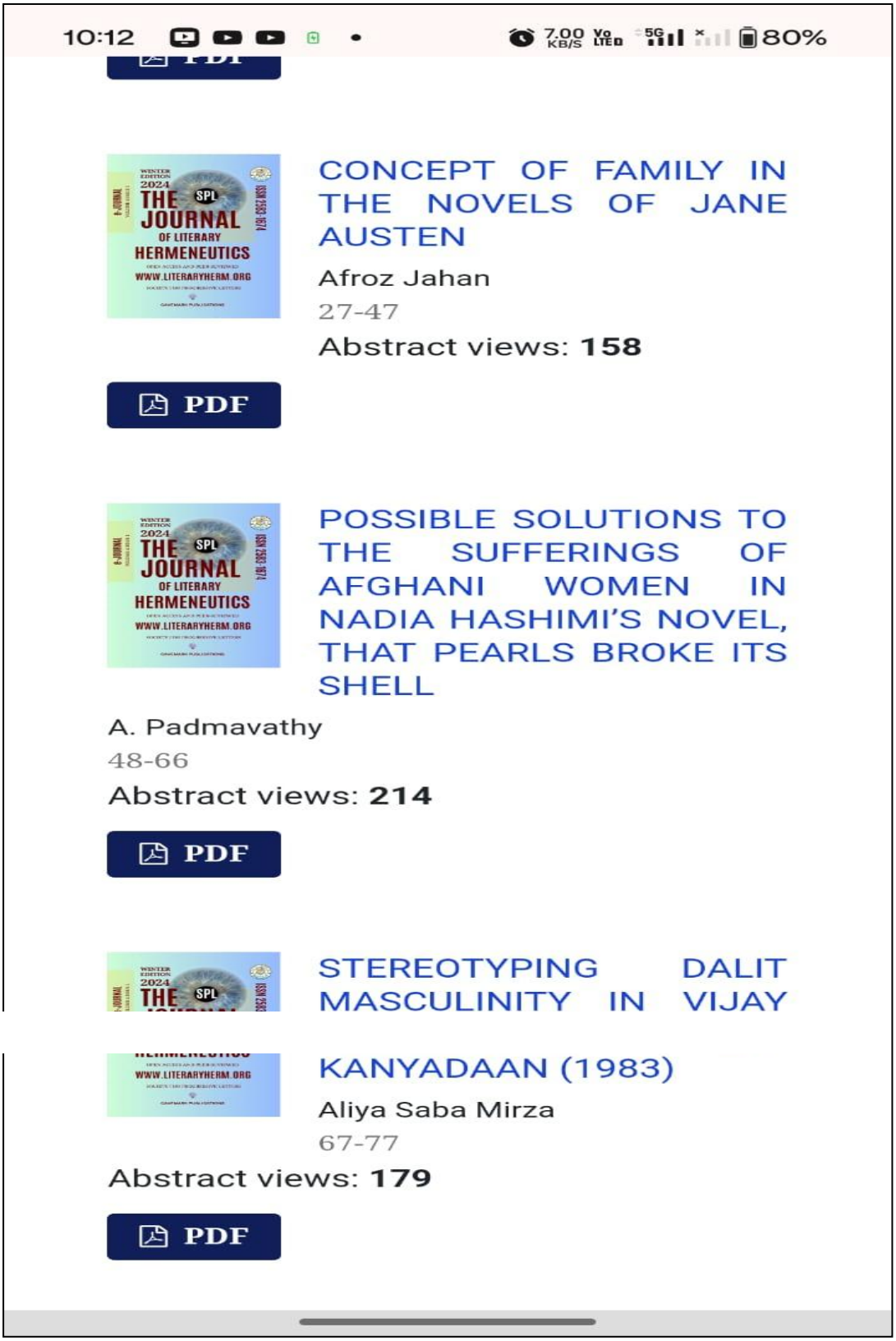

10:12 7.00 KB/S 5G 80%

PDF

CONCEPT OF FAMILY IN THE NOVELS OF JANE AUSTEN

Afroz Jahan

27-47

Abstract views: **158**

PDF

POSSIBLE SOLUTIONS TO THE SUFFERINGS OF AFGHANI WOMEN IN NADIA HASHIMI'S NOVEL, THAT PEARLS BROKE ITS SHELL

A. Padmavathy

48-66

Abstract views: **214**

PDF

STEREOTYPING DALIT MASCULINITY IN VIJAY

KANYADAAN (1983)

Aliya Saba Mirza

67-77

Abstract views: **179**

PDF

The SPL Journal of Literary Hermeneutics

A Biannual International Journal of Independent Critical Thinking

Double-blind Peer-reviewed and Open Access Journal in English

Volume 4 Issue 1 Winter Edition 2024 e-ISSN 2583-1674

www.literaryhrm.org

www.cavemarkpublications.com

Concept of Family in the Novels of Jane Austen

Afroz Jahan

ORCID: https://orcid.org/0009-0007-8142-1665

***Corresponding Author:** Afroz Jahan, Assistant Professor of English, Sahu Ramswaroop Girls P.G. College, Bareilly, afrozjahan811@gmail.com

Research Paper

Keywords:

Caste, Identity, and Socio-Cultural Commentary, Marriage, families, Psychological trauma, Self-Realization, Expectation, and Individuality.

Article History

Received: December 4, 2024

Revised: December 21, 2024

Accepted: December 30, 2024

Abstract

Aims: *The paper entitled "Concept of Family in the Novels of Jane Austen" brings out the novels deal with the position of women and their social and cultural possibilities, most of which are connected to marriage. The motive behind this research is to highlight the gender inequalities and the discriminations among family members and how these things affects the life of women. It helps to understand the impacts of society and men's stereotypical mind set on women's life.*

Methodology and Approaches: *The research design for this study is qualitative and based on textual analysis of primary and secondary sources. The research is based on correlation study. Subjective and interpretivist perspective have been taken. George Herbert Mead's theory "Symbolic Interaction" is studied for focusing on changing roles and symbols affect the ways family members interact with each other and with society.*

Outcome: *It has been explored in the research that women have been dependent on men mentally as well as emotionally. The condition of these female characters are quite matching with our own practical life and the plenty of interpersonal relationship problems can be resolved. The relevance of this research is undoubtedly worth is as many people in today's life are suffering from a relationship crisis in families.*

Conclusion and Suggestions: *The work of Jane Austen is part of a broad cultural process that has resulted in the evolution of a woman's voice as the voice of diligence and good sense. Marriage is considered to be all and end all of life. Question is raised why women should marry. Would she not able to be self-depend? Why does she not have equal opportunities as man? Why should marriage be the last and only surviving option for living a happy life? Women are not inferior or less to any other members in family. Somehow it is because they lack enough education.*

***Correspondence:** Afroz Jahan, afrozjahan811@gmail.com

© (2024) All rights are reserved with the author (s) published by CaveMark Publications. This is an Open Access Article distributed under the **Creative Commons Attribution License** at http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/ which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any form or medium, provided that the original work is properly cited or acknowledged.

This paper is available online on www.literaryherm.org and it was published by CaveMark Publications, India

अक्षर वार्ता
अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2349-7521, Impact Factor - 7.125
Vol - XX, Issue - III, Part - II, January - 2024
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021
"AKSHARWARTA" Monthly International Refereed Journal

Role of Digital Banking in India : Current Trends and Challenges

Pragati Agarwal
Prof. (Dr.) Vinay Kumar Garg

1. Research Scholar, Dept. Of Commerce, Upadhi (P.G.) College, Pilibhit, M.J.P. Rohilkhand University, Bareilly
2. Research Guide, Dept. Of Commerce, Upadhi (P.G.) College, Pilibhit, M.J.P. Rohilkhand University, Bareilly

Abstract : Digital Banking is called as using the banking services with the help of internet from anywhere and anytime. It is a shift from traditional banking services into digital world. To provide the effective digital services it is important to understand the choices and preferences of customers. This research is about the role of digital banking in India, benefits of digital banking and trends and challenges of digital banking. This research also find out some strategies to handle the challenges of digital banking in India. This research is based on the secondary data. Banking websites, RBI bulletins, various research papers and publications are used to collect the data. This research find out that customers are willing to use digital banking services and it also reduces the cost of banking. Future of Banks are in positive direction with digital banking.

Keywords:-Digital Banking, Digitalization, Technology.

Introduction: Banks are the very essential part of our economy. Money circulates easily and effortlessly in the market through the banks. Sending and receiving money digitally is very safe and time saving and easy to use nowadays. Indian Government also wants cashless economy. For this purpose digital banking is significant. Digital Banking has so many advantages for the banking sector and also for our economy. With the help of online banking, banks earn so much profit and their services are reachable to everyone with no time. In comparison to traditional banking, digital banking has so much benefits, people doesn't need to stand in a queue for long hours to deposit or withdraw money or for other services, money can be withdraw within seconds and with one click money can send to anywhere. Bills payment, shopping, sending and receiving money are so easy with the digital Banking that anybody can use it.

In 1998, ICICI Bank has introduced the digital Banking in India, after that other banks also started using it. Government has started 'Digital India Mission' to encourage people to become technological advance and make India cashless and paperless economy.

We can define digital banking astaking benefits of banking services with the help of internet or without going to the bank. Digital banking provides almost all the banking services with a click on mobile or computer. Anyone who can operate mobile can easily learn to use digital banking. People can send and receive money, can pay bills and also pay for online and offline shopping.

Different modes of digital transactions:-

1. Banking cards - credit card, debit card
2. AadharEnabled Payment System (AEPS)
3. Micro ATMs
4. Unified Payment Interface (UPI)
5. Mobile Wallets
6. Banks Prepaid Cards
7. Point of Sale (POS)
8. Internet Banking
9. National Electronic Fund Transfer (NEFT)
10. Real Time Gross Settlement (RTGS)
11. Immediate payment Service (IMPS)
12. Mobile Banking

Objectives of the study:-

1. To find out the role of digital banking in India
2. To study the current trends of digital banking
3. To understand the challenges and finding the remedies to rectify it.

Review of Literature: Sharma R., Chowhan, S.S., Arya, R (2021) "Analysis of consumer perception towards digitalization in banking sector with spe-